भारत सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2020-2022

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 7 | अंक 12 | उदयपुर शुक्रवार 01 जुलाई 2022 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

अग्नि की साक्षी में धीज प्रथा

आजादी से पूर्व हमारे देश में अनेक कानून और प्रथाएं प्रचलित थीं जिनका कोई उद्देश्यपूर्ण सामाजिक महत्त्व भी रहा होगा परन्तु अब वे निरर्थक, निरुद्देश्य, नाकामी तथा पीड़ादायक ही हैं। शासनकर्त्ता के दमनकारी रूख के चलते तथा समाज के प्रभुत्व के कारण तब सामान्य लोगों की प्रतिष्ठा और सम्मान की कोई चिन्ता या खोजखबर नहीं थी।

इनमें भी महिला समुदाय सर्वाधिक कुचला जाकर पीड़ादायक स्थिति भोगने को मजबूर था। कमोबेस आज भी कुछ प्रथाएं ऐसी ही हैं। उनमें अनेक जातियों की स्थिति उन्हीं के समाज किंवा जातीय पंचायतों के जकड़न भरे नियमों के कारण न्याय कम, अन्याय ही अधिक भोगने के लिए अत्यन्त ही पीड़ादायक तथा दिल दहला देने वाली है। इसका एक कारण यह भी रहा कि पुरुष के आगे महिला-शक्ति सदैव दोयम दर्जे की रही। शास्त्रकारों ने शास्त्रों में नारी को नर से भारी, परिवार की धुरी, सदैव सम्माननीय तथा महामानवी कहा किन्तु ये सब ठकुर सुहाते कथन ही सिद्ध हुए। यदि वस्तुस्थिति यही होती तो राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त को ये पंक्तियां नहीं लिखनी पड़तीं-

नर कृत शास्त्रों में सब बंधन हैं नारी को ही लेकर।
अपने लिए सारी सुविधाएं पहले ही कर बैठे नर।।

आज नारी को महिमावान बनाते 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' जैसे नारों का प्रभुत्व देखने को मिलता है। बेटियों को हर प्रकार की आजादी और घर की देहरी के बाहर निकल अपना विकास, उत्थान, उत्कर्ष और नर के समकक्ष सारे अधिकार हांसिल हैं तब भी ऐसे समाज हैं जिनकी आबादी 40 लाख है।

यह आबादी कभी थाना-कचहरी का मुंह नहीं ताकतीं। अपनी जाति-बिरादरी के पंच मिलकर पंचायत माण्डते हैं और सभी तरह की समस्या; बलात्कार की हो या जमीन पर कब्जा हथियाने की, चोरी चकारी की हो अथवा झगड़े टंटे की, बालिकाओं के कौमार्य परीक्षण की हो अथवा ऐसी ही कोई और; समाज के मोतबीर पंच तथा पंचायत मिलकर निर्णय करते हैं। अपराधी की कठिन परीक्षा लेते हैं और तदनुसार न्याय कर पंच परमेश्वर की तरह निर्णय देते हैं। ऐसे में अनेक बार न्याय की बजाय अन्याय की भट्टी में ही मुख्यत: महिला पीड़ा भोगती लगती है। पत्र-पत्रिकाओं में भी आये दिन महिलाजनित पीड़ा-प्रताड़नाओं की खबरें दि दलहा देने वाली पढ़ने को मिलती हैं।

एक प्रथा 'धीज' के नाम से जानी जाती है। इसे 'गोला-प्रथा' भी कहते हैं। राजस्थान में यह प्रथा कालबेलिया, सांसी, कंजर, नट, वागरिया जैसे घुमन्तू-अर्धघुमन्तू समुदायों में प्रचलित है। सभी परीक्षाओं में महिला को अपने हाथों में आग में तपते लालचट्ट गोले, कुल्हाड़ी, हथौड़ा रखना तथा खोलते तेल में हाथ डालने जैसी क्रियाएं करनी पड़ती हैं। इनमें से कोई एक वस्तु भट्टी में खूब तपाकर महिला की हथेलियों में सात पीपल के पत्तों पर रख उसे सात कदम चलना पड़ता है। उस दौरान यदि उसका हाथ जल पड़ें, हाथों में छाले पड़ जाय तो वह महिला अपनी सत परीक्षा में असफल करार दी जाती है।

लड़की के कौमार्य परीक्षण में एक व्यक्ति तीर चलाता है, दूसरा उसे ढूंढ़ने जाता है। जब तक वह लौटकर नहीं आता तब तक उस कन्या को पानी में पूर्णत: डूबे हुए रहना पड़ता है। यदि तब तक लड़की सहज रहती है तो वह पवित्र समझी जाती है और जब उसका दम घुटने लगता है तो वह अपवित्र घोषित कर दी जाती है। परीक्षण के और भी तरीके लेखक को अपनी खोजयात्राओं में देखने को मिले हैं।

ऐसी धीज प्रथा के साक्षी राजस्थान में सर्वाधिक लोकप्रिय लोकगीत भी रहे हैं। लोकगीत वे जो अपने स्वर-लय में गाये जाते हैं। देवीलाल सामर ने यह ठीक ही लिखा, लोकगीतों में समष्टि का हृदय स्पंदित होता है। खुली लय पर बिना किसी व्यवधान के स्वरों का संचार ही उनकी सच्ची कसौटी है। ये गीत जीवन के विविध प्रसंगों के साथ सांस्कारिक तौर से जुड़े होते हैं और सदियों की परम्परा की छाप उन पर रहने से अपने परिवार के स्वजनों की तरह ही समाज उन्हें अपना समझता है। इन गीतों पर व्यक्ति का नहीं, समाज का व्यक्तित्व अंकित होता है। ऐसे अनेक गीत राजस्थान में हैं जो सर्वव्यापी, सर्वप्रिय, सर्वग्राह्य, सर्वदशीय तथा सर्वकालीन हैं।

– राजस्थान स्वर लहरी, 1961, पृष्ठ क

मैंने जब इस पुस्तक का सम्पादन किया तो 32 श्रेष्ठतर पारिवारिक लोकगीतों का चयन किया। इनमें से एक लोकगीत 'म्हारा छैल भंवर रो कांगसियो पणिहार्यां ले गई रे' में धीज प्रथा का उल्लेख मिलता है। गीत के अनुसार एक पणिहारी कांगसिया चुरा ले गई। वह कांगसिया बड़ा ही सुन्दर और डेढ़ मोहर जैसा कीमती था। उसके दांते-दांते में मोती तथा उन दांतों के बीच-बीच में हीरों का जड़ाव था।

गीत में प्रियतमा अपने पति से कह रही है कि पांच गांवों के पंच बुलाकर सबके सम्मुख खुला न्याय कराऊंगी। इसके लिए मन्दिर में धीज कराऊंगी। सुनार की धमनी से लोहे के गोले तपवाकर शंकालू महिला के हाथों में रखवाऊंगी और उबलते तेल में हाथ डलवाऊंगी। गीत पंक्तिया हैं-

पांच गाम रा पंच बुलाई लूं, चौड़े न्याव कराई लूं रे।
अणी कांगसिया रे कारणिये, म्हूं छोरी रा सौगन खाई लूं रे।
धमण धमाई लूं गोळा तपाई लूं, तातो तेल तपाई लूं रे।
अणी कांगसिये रे कारणे म्हूं, मंदर धीज धराई लूं रे।।

इसी प्रथा के सम्बन्ध में दैनिक भास्कर, उदयपुर के 14 नवम्बर 2020 के अंक में 'न्याय के नाम अन्याय की धीज ; भट्टी में तपा लोहा हाथ पर रखते हैं....पीड़िता जली तो बलात्कारी बरी' शीर्षक से कुछ पंच-फैसले दिये हैं जो पठनीय हैं-

(1) भीलवाड़ा की माण्डल तहसील की विवाहिता ने देवर शम्भूनाथ पर बलात्कार का आरोप लगाया। पंचायत बैठी। पंचों ने पवित्रता जांचने के लिए धीज का सहारा लिया। दस किलो लकड़ी की आग में दो किलो की कुल्हाड़ी को तपाया। सुर्ख लाल हो गई तो उसे देवर-भाभी के हाथों में पीपल के सात-सात पत्तों पर रख दिया गया और सात-सात कदम चलने के बाद दोनों की मुट्ठी बन्द कर दी गई।

इसके बाद पंचों ने दोनों की हथेलियां देखीं। भाभी के हाथों में छाले हो गये तो पंचों ने देवर शम्भू को बेकसूर बता दिया। शम्भू के भाई पर जुर्माना लगाया। जिस वक्त यह न्याय हुआ, उस वक्त मौके पर एक पूर्व विधायक और पंचायत के तत्कालीन सरपंच सहित करीब ढाई हजार से ज्यादा लोग मौजूद थे।

(2) चुरू की सुजानगढ़ तहसील के चारिया गांव के देबुराम सांसी पर बेटे की पत्नी के साथ अवैध सम्बन्ध के आरोप लगे। पंचायत ने सालासर के पास खदायां गांव में देबुराम के हाथ पर गर्म गोला रख दिया। हाथ नहीं जले तो उसे बेदाग साबित कर दिया।

(3) सीकर के तारापुरा गांव में कुछ साल पहले हत्या के आरोपी गुढ़ा गांव निवासी जगदीश को अग्नि परीक्षा के बाद बरी कर दिया गया।

(4) जोधपुर के भदवासिया के नानूराम को चचेरी बहन से सम्बन्ध के आरोप में हाथ पर गर्म कुल्हाड़ी रखनी पड़ी। हाथ नहीं जले, बरी हो गया।

(5) भीलवाड़ी की आसीन्द तहसील के ओझियाणा के सुआलाल पर गांव के एक व्यक्ति ने उधारी नहीं लौटाने का आरोप लगाया। भोजपुरा में खागलजी के स्थान पर पंचायत बैठी। डोंगे में उबलते तेल में पड़ी अंगूठी निकालने को कहा गया। उसके हाथ नहीं जले। बदनौर के तत्कालीन थानेदार ने ही खोलते तेल से अंगूठी निकालने के बाद सुआलाल के हाथ मसलकर कहा था, हाथ नहीं जले, निर्दोष है। इस काम के बदले थानेदार को पांच हजार रूपये मिले। आरोप लगाने वाले व्यक्ति पर थानेदार ने जुर्माना भी लगाया।

(6) इसी भीलवाड़ा के तिलोली गांव की डालीदेवी के हाथों के जख्म भरे नहीं हैं। कुछ दिन पहले डाली को धीज के बाद 8 बीघा जमीन से बेदखल होना पड़ा। गांव के प्रभावशाली लोगों ने पड़ोसी की जमीन खरीदने के लिए डाली के ससुर कामदारनाथ को गवाह बनाने के लिए खाली कागज पर हस्ताक्षर कराए। इसी कागज के जरिये कामदारनाथ की जमीन पर हक जता दिया। डाली और उसके देवर लाडूनाथ ने विरोध किया तो पंचायत की मौजूदगी में गर्म हथौड़े दोनों के हाथ पर रख दिये और मुट्ठी बन्द करा दी। सात कदम चलने के बाद उनके हाथ पानी में डाले। लाडूनाथ और डाली के हाथ जल गए तो वे दोषी हो गए। पंचों ने जमीन प्रभावशाली लोगों को सौंप दी।

(7) भीलवाड़ा के वाड़िया गांव में मुर्गे की मौत पर तीन लोगों को धीज देनी पड़ी। मुर्गा मारने का आरोप लगाने वाला आरोपी और इन दोनों के धीज में बरी होने के बाद तीसरा आरोपी.... यहां कोई प्रभावशाली नहीं था।

धीज प्रथा की तरह ही आदिवासी समाज में मौताणा तथा कई जातियों में प्रचलित नाता प्रथा भी पारिवारिक प्रताड़ना की ही द्योतक हैं। समय रहते सरकार और सम्बन्धित समाज-समुदायों को इस ओर गम्भीरतापूर्वक कोई कदम उठाकर सामाजिक सौहार्द एवं समरसता को बढ़ावा देना होगा।

– म. भा.

बणजारों में वर से जुड़ा अनोखा संस्कार

बणजारा जाति में शादी के लिए घर से प्रस्थान करते समय वर-दूल्हे पर एक अनोखा संस्कार प्रचलित है। उसके अनुसार वर की दाहिनी भुजा पर गरम सीक से सात बार निशान के रूप में दग्ध-चिन्ह किये जाते हैं। इस समय गुरु एक मंत्र पढ़ता है। वह क्रमश: मंत्र उच्चरित करता जाता है और दाग लगाया जाता है। इस प्रकार सात बार मंत्र को उच्चरित करते समय सात डाम देता है। यह मंत्र है-

कोली आव, कोली जाव / कोई माईर जोत सवाव
धोलो घोड़ो हासलो रे / पातकिया सवार
तल्ली आवड़ा तलाव / मुंगी आवड़ा मोगरा
तोवा यारो बेटा हुओ / गुरु बाबा सदा-सदा।

इसे गुरु आरती कहा जाता है। इसके पीछे की जो कहानी प्रचलित है, उसके अनुसार बनजारा समाज के किसी व्यक्ति ने उनके गुरु की हत्या कर दी। इस हत्याजनित पाप के प्रायश्चित रूप में यह संस्कार सम्पन्न किया जाता है ताकि वर-दूल्हा अपने जीवन में ऐसा दुष्कर्म नहीं करें। **– डॉ. केशव फालके**

पोथीखाना

अमृत पुरुष का अभिनंदनीय पुरुषार्थ

'प्रणाम पुरुषार्थ' नाम से संस्कृतिकर्मी पं. सुरेश तांतेड़ का अभिनन्दन ग्रन्थ कई दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है। सुरेशजी की संजीवनी में राजस्थान के रजकर्ण की रागिनी और मालवे की मधुबनी मिठास का सतरंगी स्वाद समाया हुआ है। उनकी पारिवारिक जड़ें राजस्थान से चलकर मालवा तक पड़ाव लिये हैं। कोई 57 वर्ष पूर्व उन्होंने भोपाल में अभिनव कला परिषद की स्थापना कर शास्त्रीय और लोककलाओं के क्षेत्र की प्रतिभाओं को एक सुव्यवस्थित मंच प्रदान कर उनका बहुमान-सम्मान प्रारम्भ किया जो आज पूरे देश में अपनी पहचान दिये सुख्यात है।

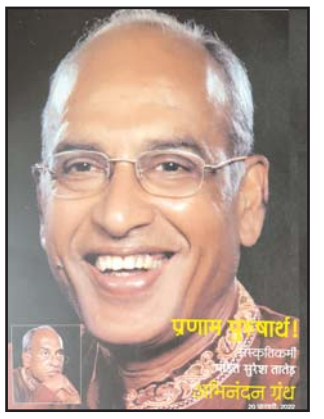

डॉ. जवाहरलाल कर्णावट को दिये साक्षात्कार में तांतेड़जी का यह कथन द्रष्टव्य है- ''परिषद द्वारा बगैर किसी विवाद के इतनी लम्बी यात्रा में देश के 4000 से अधिक शास्त्रीय, सुगम, फिल्म, लोकसंगीत के साथ ही साहित्य जगत के स्थापित कवि, गीतकार, कथाकार, व्यंग्यकार, नाटककार, पत्रकार, आलोचकों ने इसके मंच पर पधारकर इसके कार्यों की सराहना कर इसका मान-सम्मान बढ़ाया। अभिनव शब्द-शिल्पी, कला के कलाकार, अभिनव कला-सम्मान, बिजूका सम्मान तथा श्रेष्ठ कला आचार्य किसी राष्ट्रीय अलंकरण से कम नहीं हैं।'' (पृष्ठ 130)

तांतेड़जी स्वयं बहुत सधे कलाकार हैं। श्रेष्ठ तबलावादक, गायक, मल्ल विशारद और कलाकारों के हमदर्द के नाते उनकी कलापारखी दृष्टि का ही यह कमाल रहा कि पहली बार जिन कलाकारों को उन्होंने अपना सम्मानित मंच प्रदान किया वे आगे जाकर अपने-अपने क्षेत्र में अतुलनीय ख्याति लिये पद्मश्री से लेकर भारतरत्न तक के सम्मानों से विभूषित किये गये।

अभिनव शब्द-शिल्पी डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' ने तांतेड़जी को सर से लेकर पांव तक संगीत-कलाभ्यासी और सुर-साधक कहते लिखा- ''सुरेशजी एक सत्वगुण-सम्पन्न विभूति हैं। वे देश के कोने-कोने की प्रतिभाओं के अभिषेक के लिए संजीवनी प्रयास कर रहे हैं। सावन और माघ उनके आयोजनों के अनूठे अवसर होते हैं। बून्दों की जड़ी और बसन्त की दस्तक उनके संकल्पों को बीजवान बनाये रखती है।'' (पृष्ठ 83)

श्रेष्ठकला आचार्य डॉ. महेन्द्र भानावत ने मधुवनी जीवन के अमृतोत्सवी तांतेड़जी के लिए लिखा- ''समुद्र मंथन तो एकबार हुआ था पर तांतेड़जी गत पांच दशकों से मधुवन मंथन कर प्रतिवर्ष प्रतिभा-प्रज्ञावान मनीषी-रत्न खोज लाने का जो अनुकरणीय अभिनन्दनीय उपक्रम कर रहे हैं वह अपने आप में सर्वथा अनुपम, अद्भुत और अलौकिक है।'' (पृष्ठ 107)

भोपाल में रहते बसन्त निरगुणे ने तांतेड़जी को कई कोणों से अपने करीबी देखा है। वे सटीक लिखते हैं- ''उनका सम्पर्क मंत्री से लेकर सभी तक है। किसी से एक पैसा भी लेना हो तो डंके की चोट लेते हैं। खुद्दार भी इतने कि चाहे कोई भी हो, कहने में नहीं चूकते और साधिकार अपनी दीवानगी का हक भी मांग लेते हैं। उनका अमृत महोत्सव मनाना इस अर्थ में सुखद है कि उन्होंने अनेकों विद्वानों का धूमधाम से अमृत महोत्सव मनाया है।'' (पृष्ठ 113)

लगभग 350 पृष्ठों का, मोटे आर्ट पेपर पर कई चित्रों से युक्त बड़ी ही संजीदगी से यह ग्रन्थ प्रकाशित हुआ है। राजनेताओं और विशिष्ट व्यक्तियों के सन्देशों तथा शुभकामनाओं तथा पृष्ठ संख्या एवं शीर्षक विहीन 108 के करीब लेखकों की अनुक्रमणिका देकर यह अभिनन्दन ग्रन्थ एक स्मारिका विशेष बनकर ही रह गया है।

अच्छा होता तांतेड़जी के सम्बन्ध में गहन चिन्तनपरक आलेखों से परिपूर्ण एक स्थायी महत्त्व का वस्तुत: अभिनन्दनीय ग्रन्थ प्रकाशित होता। जो भी हो, तब भी तांतेड़जी के अमृत वर्षों की उपलब्धियों की जानकारी लिये अनेक लोग प्रेरणा लेते सार्थक जीवन जीने के लिए संकल्पित होंगे।

- डॉ. तुक्तक भानावत

मनासा में मनस्वी सहगल से भेंट

- डॉ. लक्ष्मीनारायण नंदवाना -

लम्बे समय के पश्चात 14 जून को मनासा पहुंचा। डॉ. पूरन सहगल से मिलने की तीव्र इच्छा थी सो शाम को बिना किसी प्रकार की सूचना दिये भेंट करने उनके आवास पर पहुंच गया। वे मुझे देख आश्चर्यचकित रह गये। 32 वर्ष पूर्व उदयपुर के पार्श्वकल्ला कार्यालय में उनसे भेंट हुई थी। डॉ. महेन्द्र भानावत की अनन्य मित्रता के साथ।

85 वर्ष की आयु लिये डॉ. सहगल मनासा में कुर्सी पर बैठे लेखन-मग्न थे। पाण्डुलिपियां और पुस्तकें सामने थीं। मैंने पूर्व भेंट का प्रसंग याद दिलाया तो वे बोले, भानावतजी से मेरी बहुत पूर्व की पहचान है, घनिष्ठता है। याद पड़ता है, मेरी पत्नी के वहां महाराणा भूपाल चिकित्सालय में भर्ती होने पर भानावतजी भोजन लेकर नियमित हालचाल पूछने आते रहे। हम अनेक संगोष्ठियों में भी साथ रहे। अभी एक कार्यक्रम में उज्जैन हमारा पहुंचने का भी है। ऐसे करते चुटकियों का दौर चलता रहा।

डॉ. सहगल ने उनके मनासा में आने व रहने के सन्दर्भ बताया कि उनका जन्म 13 जनवरी 1937 को पंचग्राही, मियांवाली (अब पाकिस्तान) में हुआ। सात वर्ष बाद भारत-पाकिस्तान का बंटवारा हो गया तो पिताजी अपनी जमीन, शानदार कोठी और जमीदारी छोड़कर परिवार सहित इधर आ गये। उस दौरान हुई मारकाट में घातक हथियारों से हुए हमलों में अपना बायां हाथ (दिखाया जहां बड़ा सा गहरा खड्डा था) जो तलवार के प्रहार से कटते-कटते बच गया पर यह विभाजन की स्थायी निशानी हो गई। यहां आकर मैंने बस स्टैण्ड पर मजदूरी की। पिताजी ने हौंसला बंधाते कहा- ''मजदूरी या किसी भी काम को करने में हिचकिचाना मत लेकिन चोरी या भीख से हमेशा दूर रहना।''

यहां मैं सामान्य शिक्षक बना पर लेखन ने मेरा बड़ा साथ दिया। विभिन्न साहित्यिक, राजकीय समितियों में प्रतिनिधित्व दिलाया। एक लम्बी सांस लेते बोले, तब से लिखना-पढ़ना मेरा जीवन-कर्म बना हुआ है। मालवी लोकसाहित्य एवं संस्कृति पर निरन्तर शोध कार्य में संलग्न हूं।

डॉ. भानावत राजस्थान में लोकसाहित्य का बड़ा उम्दा कार्य कर रहे हैं और मैं मध्यप्रदेश में धुनी रमाये बैठा हूं। विभिन्न समाजों ने मुझे बड़ा सम्मान दिया है तो मेरा सिक्का जम गया। इस दौरान बड़ी देर तक उन्होंने बालकवि बैरागी के साथ का जिक्र किया और साहित्य के सरोकारों को लेकर अनेक ओरछोर नापे।

मेरे साथ मेरे साले श्री हरिनारायणजी थे जो सेवानिवृत्त शिक्षक हैं। डॉ. सहगत की 86 पुस्तकें प्रकाशित हैं। उनमें से मालव मुकुट दशोर, नदी पेड़ और पर्यावरण, वामन से विराट बालकवि बैरागी, मालवी के सुमधुर बालगीत, आध्यात्मिक विचार मंथन, हीरासिंह जमादार नामक पुस्तकें भेंट दीं। मैंने उनसे एक यादगार फोटू खींचने का आग्रह किया तो वे कुर्ता पहनने लगे। इस पर मुझे हंसी आई। कहा कि आप बनियान में ही अधिक सुन्दर लग रहे हैं। उन्होंने ठहाका लगाया कि मोबाईल में उसे क्लिक कर दिया। ऐसी सहज भेंट और विदाई जीवन में कभीकभाक ही होती है जो ताजीवन स्मृतियों में बनी रहती है।

आदिवासी बालिका कालीबाई ने जगाई शिक्षा की अलख

75 साल पहले डूंगरपुर के आदिवासी इलाके के रास्तापाल गाँव की एक बहादुर आदिवासी बालिका कालीबाई ने अपने गुरु सेंगाभाई और पाठशाला संचालक नानाभाई खांट की रक्षा के लिए अपने सीने पर अंग्रेजों की गोली खाकर आदिवासी इलाकों में शिक्षा की कभी नहीं बुझने वाली अलख जगाई।

आदिवासी इलाकों में शिक्षा की देवी के नाम से जानी जाने वाली कालीबाई के जीवन और उनके बलिदान की कहानी अद्भुत और प्रेरक है।

राजस्थान सेवा संघ ने शिक्षा का प्रचार-प्रसार करते हुए रास्तापाल गाँव में एक पाठशाला खोली जो अंग्रेज रेजीडेंट को नागवार गुजरी। 19 जून 1947 को डूंगरपुर रियासत के सैनिक और अंग्रेज हथियार लेकर पाठशाला को बन्द कराने पहुंच गए। संचालक नानाभाई खांट के स्कूल बन्द नहीं करने पर नानाभाई अंग्रेजों की बंदूक के हत्थों की मार और गोली लगने से मारे गये। इस पर पूरे गांव में भय और आतंक छा गया। इस बीच सेंगाभाई को घसीटते देख 11 वर्षीय कालीबाई ने अपने गुरु को बचाने के लिए घास काटने वाली दरांती से जीप की रस्सी काट दी। बालिका का यह दुस्साहस सैनिकों को नागवार गुजरा और उन्होंने इस पर गोली चला दी जिससे वह लहूलुहान हो मौत को प्यारी हो गई।

इस घटना की स्मृति में सरकार ने डूंगरपुर में कालीबाई कन्या महाविद्यालय, कालीबाई नानाभाई चौराहा, नानाभाई पार्क बनाकर उनकी प्रतिमाएं स्थापित कीं। मांडवा खपारड़ा गांव में करोड़ों की लागत से कालीबाई पैनोरमा का निर्माण करा कालीबाई की जीवनी और उनके बलिदान से जुड़ी कहानी शिलालेखों और प्रदर्शनी के माध्यम से प्रदर्शित की गई।

इसी कालीबाई पर नई दिल्ली में नाटक का मंचन हुआ। जनपथ पर स्थित उड़ान और इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की ओर से नन्हे रंगकर्मी बच्चों ने बलिदान की ऐतिहासिक घटना को जीवन्त कर दिया।

मुख्य अतिथि भारतीय शिक्षा परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष जगदीश मित्तल, आईजीएनसीए के आयोजक अचल पण्ड्या और विशिष्ट अतिथि जनसम्पर्क विशेषज्ञ गोपेंद्रनाथ भट्ट ने दीप प्रज्वलित कर समारोह का शुभारम्भ किया।

संजय टुटेजा के दिशा निर्देशन में पांच बाल नाटकों का मंचन हुआ जिसमें चार टुटेजा निर्देशित वीरबाला कालीबाई के साथ ही प्रभात सेंगर एवं नोमिता सरकार द्वारा निर्देशित मैना का बलिदान, योगेश पंवार द्वारा निर्देशित सरफ़रोशी की तमन्ना, नुपार्थ चौधरी एवं अंशु द्वारा निर्देशित आज़ादी की कहानी और हिमांशु दास एवं गौरांग गोयल द्वारा निर्देशित हास्य नाटक 'भोला राम का जीव' का मंचन किया गया।

- नीति गोपेंद्र भट्ट

माधव नागदा को लक्ष्मीकान्त जोशी साहित्य सम्मान

नाथद्वारा (ह. सं.)। जोधपुर में जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय एवं सृजना संस्था के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित समारोह में कहानीकार माधव नागदा को उनके लघुकथा संग्रह 'माटी की महक' के लिए 29 मई को आचार्य लक्ष्मीकान्त जोशी साहित्य सम्मान से नवाजा गया। डॉ. बलराम अग्रवाल ने सम्मान-पत्र तथा इक्कीस हजार रुपये का चेक प्रदान करते हुए कहा कि माधव नागदा लघुकथा के क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर पर एक जाना-पहचाना नाम है। इनकी लघुकथाओं का शिल्प पाठकों को बांध लेता है।

प्रेमप्रकाश व्यास ने अध्यक्षीय उद्बोधन में नागदा की भ्रूण हत्या विषयक कथाओं में आई संवेदनाओं को अत्यन्त मार्मिक बताया। माधव नागदा ने कहा कि साहित्यकार को ऐसा कुछ लिखना चाहिए जिससे समाज में प्रेम और समरसता बनी रहे। समारोह में सुषमासिंह, डॉ. हरीदास व्यास, शीन काफ़ निज़ाम, मीठेश निर्मोही, मनोहरसिंह राठौड़, हबीब कैफी, योगेश दवे, डॉ. फतहसिंह भाटी, डॉ. नीना छिब्बर, प्रगति गुप्ता, किशन कबीरा, अखिल नागदा, हरिप्रकाश राठी, कैलाश कबीर, राकेश मूथा, पद्मजा शर्मा, प्रो. कौशलनाथ उपाध्याय की उपस्थिति रेखांकित रही। सहित कई साहित्यकार उपस्थित थे। संचालन डॉ. हरीदास व्यास ने किया।

स्मृतियों के शिखर (145) : डॉ. महेन्द्र भानावत

कठपुतलियों द्वारा अणुव्रती जीवनशैली के वैश्विक परचम

''जो शाश्वत को अभिव्यक्ति देता है, सही अर्थ में कलाकार है। श्री देवीलाल सामर को मैंने एक कलाकार के रूप में पाया है। वे ज्ञान की कुल्हाड़ी से श्रद्धा के कल्पतरु को काटने में विश्वास नहीं करते हैं। इसीलिए वे ग्रामीण व अनपढ़ लोगों की भावना को जगाने में बहुत सफल सिद्ध हुए हैं। कठपुतलियों में प्राण भरने की क्षमता जिसे प्राप्त है वह व्यक्ति निष्प्राण नहीं हो सकता।'' -आचार्य तुलसी

''अपने लेखन में लोककला-संस्कृति के साथ धर्म का समन्वय अवश्य रखना। धर्ममय कला-संस्कृति और कला-संस्कृतिमय धर्म ही जीवन को परिपूर्ण बनाता है। आदिम जीवन से लेकर आज के अधुनातन जीवन जीने वालों में भी यदि धर्म और कला का उत्तम समन्वय है तो वे सुखी जीवन का निर्वाह कर रहे हैं। विसंगतियां तभी आती हैं जब इनका संतुलन बेमेल हो जाता है।' मेरे लिए आचार्य महाप्रज्ञ की यह सीख आज भी प्राणवंत बनी हुई है।''

आचार्यश्री तुलसी तेरापंथ धर्मसंघ के शतरंगी प्रकाश थे जिन्होंने अपनी बंधीबंधाई परम्परा को मथते हुए कई नए प्रभावी सूत्र दिये तो महाप्रज्ञ उन सूत्रों के व्यावहारिक व्याख्याता एवं भाष्यकार थे जिन्होंने समय की नब्ज को पहचानते हुए तदनुकूल दर्शना दी। प्रेक्षाध्यान, अणुव्रत आंदोलन, अहिंसा यात्रा, नशामुक्ति, नया मोड़ जैसे प्रकल्प विश्वशांति के लिए अनुकरणीय सिद्ध हुए।

आचार्य तुलसी द्वारा महाप्रज्ञ दर्शन :

महाप्रज्ञजी से मेरी पहली भेंट सन् 1962 में उदयपुर में आचार्य तुलसी ने कराई। पहली बार में ही उनके स्नेहशील अपनत्व और आत्मीयता के कारण मैं सदैव के लिए उनसे बंध गया। मेरा क्षेत्र लोककला, लोकसंस्कृति एवं लोकसाहित्य का था। अत: उन्होंने मेरा तेरापंथ के उन साधु-साध्वियों से परिचय कराया जो साहित्य, संस्कृति और कला के क्षेत्र में बहुप्रसिद्ध एवं साधनारत थे। मैंने धर्मयुग से लेकर अणुव्रत तक और अन्य पत्र-पत्रिकाओं में लिखा। शोध पत्रिकाओं में भी लिखा।

उन्हीं दिनों दैनिक हिन्दुस्तान में 'व्यक्ति, साहित्य एवं समस्याएं' नामक एक लोकप्रिय स्तंभ चलता था। मैंने उन दिनों देवीलाल सामर, डॉ. मोतीलाल मेनारिया, कविराव मोहनसिंह, नरोत्तमदास स्वामी, अगरचंद नाहटा, गोवर्धन बाबा आदि पर उसमें लिखा। इस स्तंभ के लिए मैंने महाप्रज्ञजी पर भी लिखा। तब वे मुनि नथमल के नाम से जाने जाते थे।

आचार्य तुलसी ने 'मेरा जीवन मेरा दर्शन' नामक आत्मकथा में मेरी भेंट का जिक्र करते हुए लिखा- ''महेन्द्र भानावत मूलत: कानोड़ निवासी है और तेरापंथी श्रावक है। उसकी माता गहरी धर्मनिष्ठा रखनेवाली भक्त श्राविका थीं। कार्यक्षेत्र बदल जाने से महेन्द्र आदि भाइयों का सम्पर्क कुछ कम हो गया है। महेन्द्र एमए करने के बाद उस समय डाक्टरेट कर रहा था। लेखन के क्षेत्र में भी उसने अच्छा विकास कर लिया। उसने हिन्दुस्तान पत्र के लिए मुनि नथमलजी के बारे में एक लेख लिखा। लेख मुझे दिखाया, अच्छा लगा।''

(आत्मकथा भाग- 5, 21 अगस्त 1962, पृष्ठ- 166)

साधु-साध्वियों की कुशाग्र रचनाधर्मिता :

मुनि नथमलजी तब पास ही मुखर्जी चौक स्थित पगारियाजी के निवास पर ठहरे हुए थे। यहां मैं उस चातुर्मास काल के दौरान कई बार उनके दर्शन करने पहुंच जाया करता। आचार्यश्री तुलसी से परामर्श कर मुनिश्री नथमलजी ने मुझे तेरापंथ धर्मसंघ के जिन विशिष्ट साधु-साध्वियों से भेंट कराई। उनमें से कुछ अति सूक्ष्म लिपि के धनी थे। कुछ जैन दर्शन संबंधी 'जैसा कर्म वैसा फल' जैसे परिणाम को दर्शाते, स्वर्ग-नर्क के सुख-दुख भोगते बड़े ही कलात्मक चित्रों के चितेरा थे। उनकी चित्रशैली सर्वथा वैशिष्ट्य लिए थी जो तेरापंथ सम्प्रदाय की चित्रशैली ही बनी हुई थी। उन साध्वियों से भी भेंट कराई जो बहुत अच्छी काव्य-रचना करती थीं। कुछ साध्वियां गद्यगीत लिखने में कुशाग्र थीं।

मेरे लिए दिक्कत यह थी कि मैं उनके लेखन अथवा कृतित्व को वहीं बैठकर अपनी डायरी में नहीं लिख सकता था और न उनके समक्ष सीधे नोट्स ही ले सकता था। यदि कुछ लिखना होता तो मैं उसे मन में धार कर बाहर आता और लिखता फिर उनके पास जाता और पढ़-सुन बाहर आता और अपनी डायरी में लिखता। यह प्रक्रिया बड़ी लम्बी और उलझन भरी लगी।

मैंने इस बाबत महाप्रज्ञजी से निवेदन भी किया तो वे मुस्कराए और बोले, 'अपने धर्मसंघ की यही परम्परा है लेकिन इस बारे में भी चिंतन चल रहा है, देखो कोई हल निकल आये।' उस परम्परा से लेकर आज तक जो सुखद एवं समयानुकूल आवश्यक परिवर्तन हुए वे बड़े ही उपयोगी, मूल्यवान और जीवनधर्मिता के व्यावहारिक सोपान हैं। इसके चलते इस धर्मसंघ ने पूरे विश्व में अपनी पहचान पुख्ती की है।

बीदासर का ऐतिहासिक समारोह :

मुझे अणुव्रत आंदोलन से भी जोड़ा गया। बीदासर जैसे हरिजन बस्ती वाले छोटे से गांव में मोहनभाई जैसे जमीनी कार्यकर्त्ता ने इस गांव में अणुव्रत समारोह आयोजित करने का सुझाव दिया जो कइयों के गले नहीं उतरा पर आचार्य तुलसी मोहनभाई की कार्यक्षमता और हरिजनोद्धार की धुनधनी जिजीविषा का स्वागत कर पूरे गांववासियों के क्रांतधर्मी भाग्य विधाता ही सिद्ध हुए। वह समारोह अनेक अद्भुत उपलब्धियां लिये ऐतिहासिक यादगार ही सिद्ध हुआ।

देवीलालजी सामर और मैं कलामंडल के कठपुतली कलाकारों को लेकर बीदासर पहुंचे। वहां कलामंडल के कठपुतली प्रदर्शनों की बड़ी सराहना हुई तब आचार्यश्री का यह विचार बना कि अणुव्रत के सिद्धांतों के प्रचार-प्रसार के लिए कठपुतलियां अत्यंत कारगर सिद्ध हो सकती हैं। वहीं सामरजी को अखिल भारतीय अणुव्रत समिति का अध्यक्ष बनाया गया और मुझे उसकी कार्यकारिणी में लिया गया। दिल्ली के अणुव्रत भवन में बाद में जो गोष्ठियां हुई उनमें ऐसे कई विचार उभर कर आये जिनसे अणुव्रत आंदोलन को व्यापक भूमिका मिली।

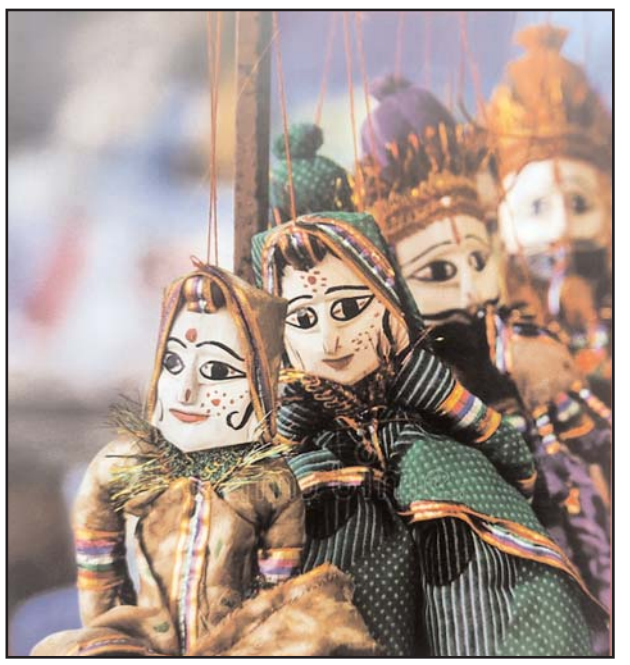

कठपुतलियां भी एक सशक्त माध्यम बनीं।

कलामंडल के कलाकारों द्वारा ऐसी पुतली नाटिकाएं तैयार करा हमने अनेक गांवों में जो प्रदर्शन दिये उससे ग्रामीणजनों ने नई करवट ली। परंपरागत अनुपयोगी एवं अनादर्श होते ढर्रों तथा ढकोसलों से उन्हें मुक्ति मिली। आजीवन नशापता छोड़ा। महिलाओं में भी नया मोड़ आया और विकास की अनेक धाराएं प्रवहमान होती नजर आई।

दिन को हम अपनी रिसर्च यूनिट के साथ ग्रामीण भाई-बहिनों से सम्पर्क कर उनमें प्रचलित लोकाचारों, लोकशिल्पों तथा जीवनधर्मी सांस्कृतिक परिवेश से जुड़े गीतों, कथाओं, गाथाओं तथा विविध ख्याल-तमाशों से रू-ब-रू होते। रेकार्डिंग करते। फोटोग्राफी करते। ऐसे करते धीरे-धीरे कलामंडल में 'लोककला संग्रहालय' बना दिया और अनेक पुस्तिकाएं प्रकाशित कीं। 'रंगायन' नामक मासिक पत्रिका शुरू की और लोककला संगोष्ठियों, लोकानुरंजन समारोहों तथा कठपुतली आयोजनों से देश-विदेश के विद्वानों तथा कलाकारों को सशक्त मंच दिया।

अणुव्रत प्रचार में कठपुतलियां कारगर :

सामरजी ने वर्षों तक कठपुतलियों के माध्यम से देश के कोने-कोने और विदेशों में भी अणुव्रत के सिद्धांतों का अनुरंजनीय प्रसार किया। व्यावहारिक जीवनदर्शन के लेखे रामायण, हड़ताल, हमारा मुन्ना, गांव की गौरी जैसी पुतली नाटिकाओं के माध्यम से एक नई हलचल ही पैदा कर दी। उन्हीं दिनों रूमानिया के बुखारेस्ट में कठपुतलियों का तृतीय अन्तर्राष्ट्रीय समारोह आयोजित हुआ। सामरजी ने इस स्वर्णिम अवसर को कैद कर उसमें भाग लेने की तैयारी प्रारंभ कर दी।

तब परंपराशील कठपुतली खेल का 'अमरसिंह राठौड़' खेल अंतिम स्वांस ले रहा था। सामरजी ने इसे पुनर्जीवित करने का बीड़ा उठाया। नागौर जिजोट गांव के नाथूभाट के कठपुतली दल को भारतीय लोककला मण्डल आमंत्रित कर दिनभर हम उसके प्रदर्शन देख खेत-तंत्र की बारीकियों से रू-ब-रू होते। मैंने पहलीबार उस पूरे खेल का स्क्रिप्ट लिखा और सामरजी ने उसके आधार पर नये सिरे से 'मुगल दरबार' नाम से नई नाटिका तैयार कर महीने भर में अपने होशियार कलाकारों से प्रदर्शन योग्य बनादी।

सामरजी ने सांस्कृतिक मंत्री हुमायू कबीर को एक विस्तृत चिट्ठी लिखी जिसमें कलामण्डल द्वारा कठपुतलियों के क्षेत्र में किये जा रहे कार्यों और उपलब्धियों के साथ रूमानिया में होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय समारोह में भारत की ओर से प्रतिनिधित्व करने को लिखा। दिल्ली में कबीर साहब ने सामरजी के प्रयास की भूरि-भूरि प्रशंसा की मगर भारत में कठपुतली की मरणासन्न स्थिति के रहते इतने बड़े अन्तर्राष्ट्रीय समारोह में भाग लेने की अनिच्छा ही प्रकट की।

सामरजी ने सारी बातें ध्यान से सुनीं। वे तनिक भी निराश नहीं हुए और अपना प्रखर प्रयत्न जारी रखते हुए प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री से भेंट कर उनके निवास पर 'मुगल दरबार' प्रस्तुत करने का विनम्रपूर्वक आग्रह किया। इशारा पाकर अपने कठपुतली कलाकारों के साथ यथासमय सामरजी पहुंच गये। प्रधानमंत्री शास्त्रीजी ने अपनी धर्मपत्नी ललिताजी, अन्य पारिवारिक सदस्यों तथा राजकाज से जुड़े प्रमुख व्यक्तियों के साथ जब पुतलीखेल देखा तो दंग रह गये। उन्होंने ऐसे बेजोड़ अद्भुत खेल की प्रशंसा ही नहीं की अपितु चार कलाकारों के छोटे से दल को भारत सरकार की ओर से उस समारोह में भाग लेने की महनीय स्वीकृति प्रदान की।

सामरजी ने उस समारोह में विश्वभर के 22 राष्ट्रों के चालीस-चालीस कलाकारों और भारी भरकम सामान को देख मात्र चार कलाकारों और बत्तीस पुतलियों की पिटारी से तुलना की तो हृदय पर जो बीती, उसका जिक्र सामरजी ने जब मेरे समक्ष किया तो मेरी आंखें भी भर आईं किंतु हजार आश-निराश के भंवरजाल के बीच डोलता कलाकार-मन उम्मीदों का आकाश थामे कभी विचलित नहीं होता और सामरजी जैसे कलाकार ने तो कभी जीवन में हताशा और निराशा को स्थान ही नहीं दिया।

अंतिम दिन जब परिणाम-पुरस्कार की घोषणा हुई तो पूरा समारोह स्थल ठसाठस भरा हुआ था और हर एक की उत्सुकता बांसों उछालें मार रही थीं। इसी बीच पारंपरिक पुतली-प्रदर्शन का सर्वोच्च पुरस्कार भारत के नाम घोषित हुआ तो निराशा के घोर अंधेरे में खोये सामरजी को लम्बी तथा खुशहाल करतल ध्वनि के बीच अनेक हाथों ने अपने अंगों का सवार बना अपार खुशियों के पंख देते सामरजी को मंच पर करतल कर दिया।

- शेष पृष्ठ सात पर

शब्द रंजन

उदयपुर, शुक्रवार 01 जुलाई 2022

सम्पादकीय

उल्टे सुल्टे नामकरण

नामकरण का हमारे यहां सौलह संस्कारों में एक संस्कार रहा है। किस राशि, नक्षत्र में जन्म लेने पर मिलने वाले फल और जीवन जीने के अच्छे-बुरे फलादेश पर ज्योतिषी विविध कुण्डली बनाकर कथन करता। ऐसी पुरानी कुण्डलियां भी अपनेआप में अध्ययन-अनुसंधान का खासा विषय हैं पर अब उस परम्परा को भी नकारा जा रहा है।

अब तो अनेक अजीबो-गरीब नाम रखे जाने लगे हैं। उनमें से कई तो बड़े ही विचित्र लगते हैं। ऐसा नहीं है कि पहले ऐसा नहीं होता था पर उन नामों के पीछे कारण छिपा हुआ था। अब तो नाम भी बहुत सारे तो निरर्थक, बेअर्थी, बेमतलबी लगते हैं।

पहले जब लड़की-दर-लड़की का जन्म होता तो परिवार में वह अवांछित, व्यर्थ तथा नकारी समझी जाती। उसके लाड़प्यार भी कम हो जाते सो नाम भी अणचाई, बगदी, रोड़ी रखते। अच्छे नक्षत्र में नहीं होने पर नगतरी रखा जाता। धनवृद्धि, समृद्धि, सुख तथा शकुनी होने पर धन्ना, सौभागी, सुहानी, सुगनी, सोवनी, लछमी जैसे नाम रखे जाते।

प्रकृति के उपादन जो रात-दिन हमारे सम्मुख हमारे बने रहते हैं उनके नाम पर तो अनेक नाम चले। यथा- गुलाब, केसर, नीम, केल, गंगा, जमना, कावेरी, सरस्वती, कृष्णा, करेला, हिमालय, तोता, मैना, आत्माराम, मिठू, चरकली, कागली, गणेश, शकुन्तला, राम, कृष्ण, महादेवी, महावीर, गोविन्द, शिव, सूरज, चांद, तारा, तेज, वर्षा, शीतल, शील, पहाड़, नगेन्द्र, नरेन्द्र, महेन्द्र, दिनेश, डूंगर, उत्तम, आनन्द, दिन, सती, देव, देवी, सुमति, नरोत्तम, नवरत्न, नानक, ऋषभ, जिनेन्द्र, राजेन्द्र, रंजना, निशा, नेहा, तुलसी, नर्मदा, गोदावरी, गंडकी, भेरू, भवानी, बाघ, शेर, चीता जैसे सैंकड़ों नाम अस्तित्व में आये। अब साहित्य की विधाओं, विद्याओं तथा बारखड़ी को लेकर नाम सुचर्चित हैं। उनमें कविता, कहानी, लेखिका, मुक्तक, तुक्तक, समीक्षा, दोहा, सोरठा, शब्द, अर्थ, आलोचना, प्रसंग, व्याख्या, टिप्पणी, ज्ञान, विद्या, अक्षर, निबंध, विज्ञान, सुज्ञान, लेख, संख्या नाम सुनने को मिले।

पश्चिम से विलोड़ित तथा अंग्रेजी भाषा से प्रभावित नामों से, नामों में संक्षिप्तीकरण का प्रभाव आया। शूरवीरसिंह का एस.एस., अंबालाल का ए.एल., देवीलाल का डी.एल., पन्नालाल का पी.एल जैसे नामों की बाढ़ आई पर उनकी सार्थकता जाती रही। खनिज पदार्थ से जुड़े नाम हीरा, पन्ना, सोना, चांदी, माणक, मोती बड़े सुहाने तथा संपदासूचक बने। रंगों के नाम भी रंगलाल, कालूलाल खूब चले। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, महाप्रज्ञ, महाश्रमण जैसे नाम भी जो भिन्न रूप में प्रचलित थे, नामवाची हो गये।

ये ही नाम हमने अपने घरों में पालतू पशु, पक्षियों के रखे। फलों तथा मिठाइयों, नमकीनों से जुड़े डाड़म, आमली, जामुन, केर, इमरती, सेव, पापड़ी, जलेबी नाम सुस्वाद लिये मिलते हैं। नामों का यह पिटारा बढ़ता ही जाएगा। अलग-अलग जाति-बिरादरी की संस्कृति तथा स्थानीय परिवेश से जुड़े नाम भी बड़े अजीब तथा इतिहास के पन्ने खोलने वाले कला-संस्कृति के द्योतक हैं। कोई नाम नहीं मिले तो निराला, अनोखा, अलबेला, टप्पू, गप्पू, गब्बू नाम भी चल पड़े। ये नाम तो मात्र मानव जीवन से संबंधित हैं। ऐसे ही अनेक बस्तियों, गांवों, कस्बों, शहरों, कोलोनियों, कॉम्प्लेक्सों, मार्गों के नाम खोजें तो बड़ा दिलचस्प अध्ययन होगा।

प्रो. सारंगदेवोत को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड

उदयपुर (ह. सं.)। जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ के कुलपति कर्नल प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत को यूनिवर्सिटी मलेशिया केलंतन, मलेशिया और डीएचएस फाउंडेशन द्वारा आयोजित एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया। उन्हें यह सम्मान शिक्षा में नवीन

पद्धतियों और नवाचारों का अन्वेषण कर उनके संवर्धन में अनुपम अवदान हेतु प्रदान किया गया। हाल ही में प्रो. सारंगदेवोत ने कुलपति के पद पर 10 वर्ष पूर्ण कर 11वें वर्ष में प्रवेश किया है।

उनके विशिष्ट कार्यों में जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ की गरिमा को पुनर्स्थापित करना, नैक द्वारा 'ए' ग्रेड प्राप्त कर लेना, सभी पाठ्यक्रमों की यूजीसी से मान्यता लेना, विद्यापीठ का आईआईआरएफ व यूनिरैंक में उदयपुर में प्रथम व राज्य में तृतीय स्थान प्राप्त कर पाना, राष्ट्रीय स्तर के खेलों का आयोजन तथा विद्यापीठ का एक रिकॉर्ड स्वीकृत होना शामिल हैं। इससे पूर्व प्रो. सारंगदेवोत की श्रेष्ठ शैक्षणिक एवं प्रशासनिक उपलब्धियों को दृष्टिगत रखते हुए बिहार के मुख्यमंत्री द्वारा चंपारण महोत्सव में 1,00,000/- नगद रुपये का प्रतिष्ठित 'महर्षि वाल्मीकि सम्मान' प्रदान किया गया। 'शब्द रंजन' की बधाई।

यात्राएं तब और अब

- दिनेश रावत -

यात्राएं अनवरत जारी हैं सदियों से। पर बहुत विभेद है यात्राओं में। तब की यात्राएं बिल्कुल अलग हुआ करती थीं अब की यात्राओं से। तब से आशय उस कालखण्ड से है जब मध्य हिमालयी अंचल में अवस्थित देवभूमि उत्तराखण्ड के चार धामों में प्रमुखता से यमुनोत्री, गंगोत्री, केदारनाथ व बद्रीनाथ की यात्रा पर निकलने वाले यात्रियों के भाव-स्वभाव आज के यात्रियों से बहुत अलग हुआ करते थे।

उनकी यात्रा के मूल में आमोद-प्रमोद, आनंद-अनुरंजन, भ्रमण-पर्यटन नहीं बल्कि श्रद्धा-विश्वास और आस्था के भाव समाहित होते थे। यात्रा का अंतिम लक्ष्य भगवान दर्शन प्राप्त करके मोक्ष प्राप्ति करना होता था। इसलिए ताउम्र जीवन के झंझावतों में फंसा लोक का सीधा व सच्चा जन-मानस तमाम सामाजिक व पारिवारिक

दायित्व एवं जिम्मेदारियों या एक पिता, पुत्र, भाई, माँ, बहिन के रूप में अपने दायित्वों का निर्वाहन करने के पश्चात ही यात्रा पर निकलने का मन बनाता था। परिजन, नाते-रिश्तेदार, सगे-सम्बंधी सहित समूचा ग्राम समाज उनकी यात्रा में सहभागी या सहयोगी बनता था क्योंकि उनके लिए बहुत अलग होते थे यात्रा के मायने। जिन्हें वे बखूबी जानते-मानते व समझते थे।

सड़क, संचार, परिवहन, आवास जैसी मूलभूत सुख-सुविधाओं के अभाव में बहुत ही हिम्मत-साहस के साथ भगवान के प्रति गहरी आस्था रखने वाले श्रद्धावान लोग ही आस्था-विश्वास का आवरण ओढ़कर पूरे नीत-नियम के साथ यात्रा पर निकलते थे, वह भी जीवन की अंतिम अवस्था में।

खाने-पीने से लेकर ओढ़ने-बिछाने और पूजा-प्रसाद तक के सामान की पोठलियों को घर से ही पीठ पर उठाकर हाथ में लाठी, छाता पकड़े बेहद उबड़-खाबड़ रास्तों, दुर्गम पहाड़ी पगडंडियों का नापते हुए, घनघोर विरान जंगलों से होते हुए, उफनते नदी-नालों तथा मौसमी झंझावतों को मात देते हुए अपनी यात्रा पूरी करते थे। यात्रा पर निकले लोग सकुशल घर वापसी करेंगे भी या नहीं इस बात से भी सभी आशंकित व भयभीत रहते थे मगर भगवान के प्रति मन में बसी आस्था ऐसे भाव-विचारों को मन-मस्तिष्क पर अधिक हावी-प्रभावी नहीं होने देते थे। इसलिए प्रभु का सुमिरन-वंदन करते हुए वे निकल पड़ते थे।

आज के जैसे उस वक्त यात्रा के लिए न ही सड़क मार्ग व परिवहन सुविधाएं सुलभ थीं। ना खाने-ठहरने को वातानुकूलीत होटल-रेस्तरां। दिनभर पैदल चलते हुए जहाँ कहीं भी अंधेरे की कालिमा उन्हें अपने आगोश में ले लेती, किसी गुफा-ओडार या घनी वृक्ष लताओं का सहारा लेकर वे कम्बल बिछाकर आराम-विश्राम करने लग जाते थे।

यात्रा को लेकर लोगों में एक अलग किस्म का उत्साह-उल्लास होता था। इसलिए तो जिस दिन वे यात्रा पर निकलते थे समूचे गाँव की महिलाएं व युवतियाँ हाथों में धूप-दीप, गंध-अक्षत, पत्र-पुष्प और गौमूत्र का पात्र लिए उनके आगे-आगे निकल पड़ती थीं। जिस पथ से वह यात्रा के लिए निकलते ये महिलाएं उस पथ पर गौमूत्र का छिड़काव करते हुए उसे उनके लिए पवित्र करते जाते। धूप-दीप की सुवास से पूरा लोक महक उठता था। यात्रियों को विदा करने के लिए घर-गाँव से उनके साथ निकला ग्रामवासी नर-नारियों को समूह उन्हें गाँव से बहुत दूर तक छोड़ आते थे। धूप-दीप दिखाकर देवी-देवताओं का पूजन-वंदन-स्मरण करते हुए उन्हें टीका-चंदन, पत्र-पुष्प देकर सफल व सुफल यात्रा की कामना के साथ उन्हें विदा कर घर लौट आते थे। यात्रियों की पीठ पर लदे भारी-भरकम बोझे में उनके अंग वस्त्र, कम्बल, देवी-देवताओं की प्रतिमाएं, रास्ते में भोजन व्यवस्था के लिए घी, गुड़, आटा, भगोना, पूजा के लिए धुप्याना, केदारपाती, गूगल, मासी जैसे प्राकृतिक धूप बहुत ही व्यवस्थित तरीके से रखा रहता था।

यात्री की यात्रा सफल-सुफल व मंगलमय हो, नर-नारियाँ के अतिरिक्त लता-पुष्प, पशु-पक्षी भी मानो ऐसी कामना में रत दिखायी पड़ते थे।

यात्रा मार्ग कितना ही कंटिला व पथरीला क्यों न हो वे पूरी आस्था के साथ नंगे पाँव ही अपनी यात्रा पूरी करते थे। यात्रा आरंभ से अंत तक उपवास रहता था। नियमित संध्या-पूजा के बाद एक समय भोजन करते थे। भोजन में भी स्वादिष्ट व लजीज व्यंजन नहीं बल्कि घर से बना चूरमा ही लिया जाता था। चूरमा यदि खत्म हो जाए तो साथ रखे घी, गुड़ और आटे से फिर चूरमा तैयार करके आगे की यात्रा पूरी करते थे यानि उनका आहार-विचार-व्यवहार पूरी तरह सात्विक होते थे। वे आस्था के रंग में इस कदर रंगे रहते थे कि पाँव के छाले और मार्ग की दुस्वारियाँ भी उन्हें कष्टप्रद व पीड़ादायक नहीं लगते थे।

उनके अतिरिक्त घर के सदस्य भी कुछ खास नीत-नियमों का पालन करते हुए उनकी खुशहाली की कामना करते थे। जिसके लिए- 'एक बेऊ खाणू, दुई बेऊ न्वाणू' की युक्ति खासी प्रचलित है। जिसका अर्थ हुआ दिन में एक वक्त खाना और दो वक्त नहाना। इसी का पालन करते हुए घर की एक सदस्य प्रतिदिन ब्रह्ममूर्त में उठकर स्नान करती। धूप-दीप जलाकर उस पथ पूजन को निकल पड़ती, जिस पथ से उसके परिजन यात्रा पर गये हैं। लोकगीत की निम्नांकित पंक्तियाँ भी इस परंपरा की पुष्टि करते हैं- 'केदार क बाट्टा कौंरै, तू धुपेया बाटू ले, काले कौंरै तू धुपेया बाटूले।'

अर्थात् जिन पथ से होकर परिजन यात्रा पर गए हैं परिजन उस पथ पर जाकर संबंधित तीर्थ का स्मरण-वंदन करते हुए पूजन-वंदन के साथ अपने पारिवारिक सदस्यों की यात्रा की सफलता व सुफलता की कामना करते थे। रास्ते को धुप्याने का यह क्रम एक-दो दिन नहीं बल्कि तब तक जारी रहता था जब तक कि यात्रा पर गए परिजन सकुशल यात्रा से घर न लौट आते। रास्ते को धुप्याने यानि पूजने का शुभारंभ वे उसी स्थान से करते थे जिस स्थान से उन्होंने यात्री दल को विदा किया है। उसके बाद दूरी का क्रम घटता जाता था। जैसे पहले दिन उसी स्थान तक, दूसरे दिन उससे थोड़ा पहले, फिर उससे थोड़ा पास और जब तक यात्री लौट आते उनके पूजन का क्रम भी घर के आंगन तक पहुंच जाता था।

यात्रा पर गये लोग भी लोकाचार का पूरा ध्यान रखते हुए यात्रा पर जाते हुए सबसे पहले गंगाजी की जलधारा के प्रकट्य स्थली गंगनाणी में पूजा के लिए हल्वा बनाकर भोग लगाते थे, जिसे लोकवासी 'सिन्नी' कहते हैं, वैसे ही यात्रा से वापसी के दौरान भी उसी स्थान पर और मध्य में तीर्थस्थल पर करते थे। जाते हुए बनाए गये भोग-प्रसाद को पहली सिन्नी और आते हुए बनाए गये भोग-प्रसाद को 'दोहरी सिन्नी' कहा जाता है। सिन्नी करना यात्रा का एक मुख्य व अभिन्न आयाम होता था।

यात्रा पूरी करके जब घर लौटते, समूचा ग्राम समुदाय पुनः धूप-दीप, गंध-अक्षत, पत्र-पुष्प व गौमूत्र लेकर उनके स्वागत का उमड़ पड़ते थे। रास्ते भर में गौमूत्र का छिड़काव करते हुए उनके मार्ग को पवित्र करते जाते। धूप-दीप की सुवास, गंध-अक्षत की चमक-दमक और बद्री-केदार, गंगा-यमुना के जयकारों के उद्घोषों के साथ उन्हें बेहद सम्मान के साथ घर पहुँचाया जाता था। घर पहुँचने पर अगले रोज ब्रह्मभोज का आयोजन किया जाता था। इसके लिए नाते-रिश्तेदार, सगे-सम्बंधियों व ग्रामवासियों को भोजन के लिए बुलाया जाता था। यात्रा पर गये लोगों के चरण धूलिका निकालकर लोग बहुत ही आदर-सत्कार एवं आस्था-विश्वास के साथ अपने सिर-माथे पर रखते थे।

लोकास्था के इन तमाम पहलुओं का अध्ययन-अवलोकन करके तब की और अब की यात्राओं मध्य विद्यमान विभेद को सहजतापूर्वक समझते हुए इय निष्कर्ष तक पहुँचा जा सकता है कि सही-गलत क्या है।

ये शैतान कब दंडित होंगे ?

उदयपुर में एक हिंदू दर्जी की हत्या करनेवाले दो मुसलमानों के खिलाफ पूरे देश में भयंकर गुस्सा फैला हुआ है लेकिन भारत की जनता को सलाम कि उसने प्रतिहिंसा का रास्ता अख्तियार नहीं किया है।

अनेक प्रमुख हिंदू और मुसलमान नेताओं ने कड़े शब्दों में इस हत्याकांड की भर्त्सना की है। कई आतिवादी समझे जानेवाले मुस्लिम नेताओं ने उन दोनों हत्यारों को कठोरतम दंड देने की मांग की है। उन दोनों हत्यारों को उन्होंने इंसान नहीं, शैतान बताया है।

यह भी ध्यातव्य है कि अनेक उग्र हिंदूवादी नेताओं ने भी इस मौके पर विलक्षण संयम का परिचय दिया है। इस हत्याकांड ने सारी दुनिया में इस्लाम को तो कलंकित कर दिया है लेकिन भारत की सहनशीलता की छवि सबके हृदय पर अंकित कर दी है। अनेक पश्चिमी और पूर्वी दुनिया के देशों से मेरे मित्रों के फोन आए। उनमें हिंदू, मुसलमान, ईसाई, बौद्ध और यहूदी सभी शामिल हैं। सब ने एक स्वर में इस हत्याकांड की निंदा की है। अरब देशों के कुछ मुस्लिम मित्रों ने मुझे बताया कि जो घृणित काम उदयपुर में हुआ है, उसकी अनुमति किसी मुस्लिम देश में भी नहीं है। इस्लाम में इस तरह का जघन्य अपराध करने की इजाजत किसी भी शख्स को नहीं है।

इन दोनों हत्यारों का संबंध सउदी अरब और पाकिस्तान से भी बताया जा रहा है। ये दोनों हत्यारे इन देशों में जाकर रहे हैं और वहां उन्होंने दावते-इस्लाम और तहरीके-लबायक जैसे उग्रवादी संगठनों से भी सांठ-गांठ की है। इस मामले में सच्चाई क्या है, यह तो जांच से आगे-आगे पता चलेगा लेकिन इस घटना से भारत और सभी मुस्लिम देशों को यह सबक क्यों नहीं लेना चाहिए कि उन सब संस्थाओं और संगठनों से अपने देशों को मुक्त करें, जो मजहब के नाम पर इतने जघन्य अपराधों के लिए लोगों को प्रेरित करते हैं।

इसी संदर्भ में सभी मदरसों पर भी प्रबुद्ध मुसलमानों को कड़ा नियंत्रण रखना होगा। सभी धर्मों के सर्वोच्च अधिकारियों को या तो अपने-अपने धर्मग्रंथों की ऐसी बातों को छांट देना चाहिए, जो देश और काल के विपरीत हो गई हैं या उनकी व्याख्या इस तरह से करनी चाहिए कि जो देश और काल के अनुकूल हो।

जहां तक हमारे राजनीतिक नेताओं का सवाल है, उनकी प्रतिक्रिया तो बहुत ही दुखद है। हत्या-पीड़ित परिवार के लिए सहानुभूति व्यक्त करना तो उचित है लेकिन इस हत्याकांड को लेकर नेतागण एक-दूसरे पर जो कीचड़ उछाल रहे हैं, वह बिल्कुल भी उचित नहीं है। हमारे नेता इस घटिया राजनीति का सहारा लेने की बजाय यदि भारत की जनता में धार्मिक, सांप्रदायिक और जातीय सहिष्णुता का भाव प्रोत्साहित करें तो ऐसे हत्याकांडों की पुनरावृत्ति भारत में कभी हो ही नहीं।

सभी दलों के नेताओं को ऐसा प्रयत्न क्यों नहीं करना चाहिए कि इस तरह के हत्यारों को, जो अपने कुकर्म के खुद गवाह हैं, और जिन्होंने अपना वीडियो खुद बनाया है, उन्हें हफ्ते-दो-हफ्ते में ही ऐसी सजा दी जाए कि जिसे देखकर भावी अपराधियों के रोंगटे खड़े हो जाएं।

-डॉ. वेदप्रताप वैदिक

अपना देश अपनी संस्कृति

जड़ेली का कमाल

मेघला मेवाड़ का बड़ा नामी डाकू था। वह बड़ा साहसी और शूरवीर था। लोग उसके नाम से ही घबराते थे। डाका डालने में वह जितना पहुंचा हुआ था उतना ही अपने उसूल का पक्का था। जाति से वह बावरी था। उन दिनों उदयपुर में दिल्ली दरवाजे के पास बड़ के नीचे जेल थी। देवगढ़ का केसरसिंह राजपूत मुखबीर था जो मेघला को पकड़कर लाया था। मेघला के हाथों में हथकड़ी और पांवों में बेड़ी थी। वह अन्य कैदियों के साथ मस्ती से अपनी सजा काट रहा था।

एकदिन कैदियों ने मेघला से मजाक की और कहा कि सुनते तो यह आ रहे थे कि इस जमीं पर कोई माई का लाल ऐसा नहीं जन्मा जो मेघला को बंदी बना सके पर मेघला तो अपने चारों हाथ-पांवों में बेड़ी से जकड़ा हुआ है।

यह सुन मेघला मुस्करा दिया। उसके मन में यह बात गहरी पैठ गई। उसने तय कर लिया कि कैदियों को ऐसा चमत्कार बताना पड़ेगा जिससे वे यह जान सकें कि असली मेघला के भीतर एक और मेघला है जिसका भेद कोई नहीं जान पाया।

दूसरे दिन सुबह उसने सभी कैदियों को जादू बताने की घोषणा की और देखते ही देखते बेड़ीबंध को छुआ उसकी कील अचानक उछलकर दूर जा गिरी। इससे बेड़ी खुलकर अलग हो गई। सभी कैदियों में खलबली मच गई। पहरा दे रहे मुबारक गनी ने भी मेघला का यह करिश्मा देखा तो उसका रोम-रोम कांप उठा। इस घटना से मुखबीर केसरसिंह के होश भी खट्टे हो गये।

मेघला की इस करतूत की खबर हाकिमसाब को दी गई तो वे बड़े आग बबूला हुए और मेघला को खूब डांटा फटकारा । मेघला ने निडरता से कहा- इसमें मेरी कोई गलती नहीं है। बेड़ी खुल गई फिर भी मैं भागा तो नहीं हूं। यदि नौ-दो-ग्यारह हो जाता तो मेरा कोई क्या बिगाड़ लेता। अब तो एकमात्र यही चारा है कि लुहार को बुलाकर बेड़ी के डबल कील लगवा दी जाय।

हाकिम ने ठंडे मन से सोचा कि मेघला जो कुछ कह रहा है, उसकी बात मान ली जाय। यदि महाराणा साहब को पता चल गया तो लेने के देने पड़ जायेंगे। हाकिम ने लुहार को बुलाकर डबल कील लगवा दी।

थोड़े दिन निकल जाने पर मेघला ने अपने साथियों के समक्ष बीती बात का रहस्य खोलते हुए कहा- वह कोई जादू नहीं था। केवल एक जड़ेली का कमाल था जिसके छुवाने मात्र से वह कील दूर जा पड़ी। जड़ेली का वह कमाल तो कुछ भी नहीं है। यदि मै अपने सारे कमाल दिखाने लग जाऊं तो पता नहीं क्या स्थिति हो।

- म. भा.

प्रताप के लिए कोई अपशब्द बोलता है तो बहुत पीड़ा होती है : मेवाड़

उदयपुर (ह. सं.)। लेकसिटी प्रेस क्लब के मीट द प्रेस कार्यक्रम का आगाज मेवाड़ के पूर्व राजपरिवार के सदस्य लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ से क्लब अध्यक्ष कपिल श्रीमाली ने सीधी बात के साथ किया। प्रताप, मेवाड़ गौरव, संस्कृति तथा उनके राजनीति में आने के पूछे सवालों की जवाब देते लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ ने कहा कि जब कोई महाराणा प्रताप के लिए अपशब्द बोलता है तो मन में बहुत पीड़ा होती है। प्रताप ने स्वतंत्रता को जन्म दे आजादी की अलख जगाई। असली राष्ट्रवाद हम उनसे सीख सकते हैं।

उदयपुर ने अपना नाम पूरी दुनिया में स्थापित किया जिसका श्रेय प्रत्येक उदयपुरवासी को जाता है। मेवाड़ को दुनिया इसकी सांस्कृतिक विविधता के लिए भी पहचानती है। धीरे—धीरे यह शिक्षा व मेडिकल हब के रूप में भी स्थापित होता जा रहा है। अब तक दुनिया उदयपुर को पूर्व का वेनिस नाम से जानती है। हमारी सफलता तब है जब वेनिसवासी यह कहें कि हम पश्चिम के उदयपुर हैं।

लक्ष्यराजसिंह ने कहा कि जुझारुपन व कर्मठता से सामाजिक क्षेत्र में काम करना मेवाड़ की परंपरा रही है। यह बरसों से चला रहा है। जिन रास्तों पर पूर्वज चले उन पर चलने का मेरा प्रयास है। अब कोई भी व्यक्ति जनप्रतिनिधि के रूप में सामने आ सकता है। सभी के लिए वो दरवाजे खुले हैं। उन्होंने कहा कि गुजरात में गुजराती व मारवाड़ में मारवाड़ी बोलते हैं लेकिन उदयपुर में मेवाड़ी बोलने में लोग संकोच करते हैं। हमें हमारी भाषा और संस्कृति के संरक्षण के लिए जमीनी स्तर पर काम करना होगा। व्यक्ति कितनी भी भाषाएं सीखें, लेकिन अपनी मेवाड़ी और हिन्दी भाषा को हृदय में समाकर रखे तभी स्थानीय संस्कृति का गौरव बढ़ेगा।

इस अवसर पर क्लब कार्यकारिणी की ओर से लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ को स्मृतिचिन्ह भेंट कर अभिनंदन किया गया। साथ ही प्रस्तर शिल्पकार हेमन्त जोशी, समाजसेवी व श्रीनंदा प्रोपराईटर चन्द्रेश व्यास तथा सिंधी अकादमी के पूर्व अध्यक्ष हरीश राजानी को भी सम्मानित किया गया।

आयोजन में जनसंपर्क उपनिदेशक डॉ. कमलेश शर्मा, क्लब के पूर्व अध्यक्ष संजय गौतम, संजय खाब्या, प्रकाश शर्मा, प्रदीप मोगरा, प्रतापसिंह राठौड़, रफीक एम पठान, मनीष जोशी सहित बड़ी संख्या में मीडियाकर्मी मौजूद थे। संचालन जयश्री नागदा ने तथा आभार निशा राठौड़ ने ज्ञापित किया।

भामाशाह स्वामीभक्ति एवं राष्ट्रभक्ति के पर्याय थे : टांक

उदयपुर (ह. सं.)। महावीर युवा मंच द्वारा हाथीपोल स्थित भामाशाह सर्कल पर दानवीर भामाशाह की 475वीं जयंती धूमधाम से मनाई गई। मुख्य अतिथि महापौर गोविंदसिंह टांक थे। अध्यक्षता जिला प्रमुख ममताकुंवर पंवार ने की। मुख्य वक्ता उपमहापौर पारस सिंघवी थे। विशिष्ट अतिथि प्रेमसिंह शक्तावत, रवीन्द्र श्रीमाली, चंद्रसिंह कोठारी, भंवर सेठ, वीरेन्द्र बापना, भंवरसिंह पंवार, तखतसिंह शक्तावत, कमलेन्द्रसिंह पंवार, गजपालसिंह राठौड़, देवनारायण धायभाई, शैलेन्द्र चौहान, शांतिलाल मेघवाल, ताराचंद जैन, कुलदीप नाहर तथा आलोक पगारिया थे।

इस अवसर पर गोविंदसिंह टांक ने कहा कि जिस समय दानवीर भामाशाह ने अपनी सम्पत्ति का समर्पण किया, उस समय मेवाड़ की स्वतंत्रता और संस्कृति की रक्षा के लिए महाराणा प्रताप कड़ा संघर्ष कर रहे थे। अर्थ की दृष्टि से महाराणा और सेना के लिए धनाभाव था। तब भामाशाह ने अपना निजी अर्जित धनकोश महाराणा के चरणों में अर्पित कर दिया। भामाशाह स्वामीभक्ति, स्वावलंबन, राष्ट्रभक्ति के पर्याय थे।

ममताकुंवर ने भामाशाह के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को देश के लिए प्रेरणापुंज बताया। पारस सिंधवी ने कहा कि भामाशाह ने संकट के समय न केवल समग्र राजकोश की राशि अपितु स्वयं का अर्जित धन भी अपने स्वामी के चरणों में अर्पित कर दिया। ऐसा पूरे विश्व में कोई अन्य उदाहरण नहीं मिलेगा। मुख्य संरक्षक प्रमोद सामर ने कहा कि भामाशाह की जयंती और पुण्यतिथि मनाने का यही उद्देश्य है कि आने वाली हर पीढ़ी में प्रताप और भामाशाह के व्यक्तित्व की प्रभावना बढ़े।

अध्यक्ष डॉ. तुक्तक भानावत ने कहा कि 'वीर शिरोमणि' के रूप में राजस्थान की माटी तो सबके लिए नमनीय है ही पर दानवीरों की दृष्टि से भी इतिहास सदा ही आंखों पर चढ़ा हुआ है। इस कड़ी में भामाशाह का नाम तो 'दानवीर' का पर्याय ही हो गया।

महामंत्री हर्षमित्र सरूपरिया ने बताया कि इस मौके पर मंच के अजय पोरवाल, डी. के. मोगरा, ओमप्रकाश पोरवाल, मुकेश हिंगड़, राजेश चित्तौड़ा, कमल कावड़िया, बसंत खिमावत, सतीश पोरवाल, अर्जुन खोखावत, अरविंद सरूपरिया, अशोक लोढ़ा, भगवती सुराणा, नीरज सिंघवी, प्रमिला एस. पोरवाल, ललिता कावड़िया, रश्मि पगारिया, राखी सरूपरिया, मधु सुराणा, नीता खोखावत, मंजुला सिंघवी, मनोज मुणेत, राजेश जैन मौजूद थे।

भामाशाह जयंती के संयोजक नीरज सिंघवी ने बताया कि समारोह में जनप्रतिनिधि एवं सर्वसमाज के पदाधिकारियों में सर्वश्री सन्नी पोखरना, विक्रम भंडारी, तुषार मेहता, मुकुल मेहता, चन्द्रेश सोनी, आकाश वागरेचा, हेमंत बोहरा, ओम अग्रवाल, अनिल जारोली, मनोज भटनागर, अनिल कोठारी, दीपक शर्मा, प्रदीप राजानी, प्रकाश कोठारी, कमलेन्द्रसिंह, विपुल वैष्णव, कुन्दन चौहान, पवन बम्बोरिया, दिलीप सुराणा, अनिल नाहर, रेवाशंकर गायरी, ओम खोखावत, हेमंत बोहरा, राकेश जैन, संजीव जैन, राजेश बया, जमकलाल जैन, अक्षय बड़ाला, लादूलाल मेड़ावत, लोकेश कोठारी, भरत मीणा उपस्थित थे।

संचालन अर्जुन खोखावत ने किया। धन्यवाद डॉ. तुक्तक भानावत ने दिया। स्वागत नीरज सिंघवी ने किया। मंच परिचय महामंत्री हर्षमित्र सरूपरिया एवं अतिथि परिचय राजेश चित्तौड़ा एवं कमल कावड़िया ने दिया।

बाजार / समाचार

बांझपन की पीड़ा झेल रहे दंपती भी पा सकते हैं संतान सुख

उदयपुर (ह. सं.)। कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय का अनुमान है कि दुनियाभर में लगभग 15 प्रतिशत दंपतियों को गर्भधारण करने में परेशानी होती है। विश्वस्तर पर, 48.5 मिलियन जोड़े बांझपन का अनुभव करते हैं। वर्ष 2019 में 15 से 44 वर्ष के 9 प्रतिशत पुरुषों और 10 प्रतिशत महिलाओं में संयुक्त राज्य अमेरिका में बांझपन की समस्या दर्ज की। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) की एक रिपोर्ट के अनुसार विकासशील देशों में हर 4 जोड़ों में से एक जोड़ा बांझपन की समस्या से जुझता है। यह जानकारी सोमवार को आयोजित प्रेसवार्ता में विंग्स आईवीएफ उदयपुर की सेंटर हेड और आईवीएफ विशेषज्ञ डॉ. निशा अग्रवाल ने दी।

डॉ. निशा अग्रवाल ने बताया कि सामाजिक तनाव, वित्तीय स्वतंत्रता और अस्वास्थ्यकर भोजन की आदतें हार्मोनल संतुलन को बिगाड़ देती हैं और इसके परिणामस्वरूप बांझपन होता है। शोध से पता चला है कि महिला बांझपन की तुलना में 30 प्रतिशत भारतीय पुरुषों में सामान्य वीर्य लक्षण होते हैं जो महिलाओं के लिए गर्भधारण करने में समस्या पैदा करते हैं।

डॉ. अग्रवाल ने बताया कि विज्ञान ने न केवल लिंग विशेष की मान्यता को तोड़ा है, बल्कि जोड़ों के लिए संतान सुख का मार्ग भी प्रशस्त किया है। सहायक प्रजनन तकनीक (एआरटी) उस तकनीकी प्रगति में से एक है जो पूरे देश में हजारों दंपतियों की सहायता कर रही है। इस प्रक्रिया में, दंपति के अंडे और शुक्राणु को एक प्रयोगशाला में निषेचित किया जाता है। एक बार जब अंडा निषेचित हो जाता है या भ्रूण में परिवर्तित हो जाता है, तो इसे महिला के गर्भ में प्रत्यारोपित कर दिया जाता है।

डॉ. निशा अग्रवाल ने बताया कि असंरचित और असंगठित भारतीय आईवीएफ बाजार घातक है। विंग्स आईवीएफ मेंहमारे पास आने वाले 60 प्रतिशत से अधिक जोड़ों को डोनर एग फर्टिलाइजेशन की सलाह दी जाती है। दंपतियों को यह भी पता नहीं है कि वे अपने अंडों से गर्भधारण कर सकते हैं। विंग्स आईवीएफ में हम तीसरे पक्ष के दान से बचने के लिए आईवीएफ सायकल के प्रयासों को कम करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं। माइक्रोफिल्ट्रेशन क्लोज्ड सिस्टम के साथ हमारी उन्नत एएचयू लैब, और क्लोज टाइम-लैप्स इन्क्यूबेटर्स हमारी आईवीएफ प्रक्रिया को जोड़ते हैं। ये उन्नत विधियां प्रति पेग गुणात्मक भ्रूण बनने को सुनिश्चित करती हैं। यह अत्यंत कठिन परिस्थितियों जैसे कम एएमएच, उन्नत मातृ आयु, और आवर्तक आईवीएफ विफलता में भी भ्रूण बनने में सुधार करता है, यही मुख्य कारण है कि लोगों को डोनर एग के लिए समझाया गया है।

भारत में, बांझपन अब एक निजी समस्या नहीं है। लगातार बढ़ती संख्या बताती है कि यह लगातार बढ़ रही है। ऐसी विकट स्थिति में, संतान सुख के करीब लाना एक सौभाग्य की बात मानते हैं। हमारे अस्पताल में बांझपन के विभिन्न कारणों से कई रोगी आते हैं। हम इसे प्रभावी ढंग से निदान और उपचार करना अपनी जिम्मेदारी के रूप में लेते हैं। अपने स्वयं के युग्मकों के साथ हमारे रोगी के जीवन में आनंद लाने का हमारा मिशन हमें दूसरों से अलग करता है। हम आपको अपने पितृत्व का आनंद लेने के लिए उन्नत तकनीक के साथ अपना सर्वश्रेष्ठ कदम आगे बढ़ाते हैं।

महाप्रज्ञ का जन्म दिवस मानवता का जन्म दिवस : मुनि सुरेश

उदयपुर (ह. सं.)। प्रेक्षा प्रणेता आचार्य महाप्रज्ञ का 103वां जन्म

दिवस 26 जून को शासनश्री मुनि सुरेशकुमार के सान्निध्य में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा और अणुव्रत समिति के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित हुआ।

मुनि सुरेशकुमार ने कहा कि सदियों तक माटी तपस्या करती है तब कहीं जाकर धरती पर आचार्य महाप्रज्ञ जैसे मनीषी अवतार लेते हैं। महाप्रज्ञ का जन्म दिवस मानवता का जन्म दिवस है। मुनि संबोधकुमार 'मेधांश' ने कहा महाप्रज्ञ की किताबें हर पीढ़ी को उसकी समस्याओं से बाहर निकालकर समाधान की सौगात सौंपती हैं। मैं सौभाग्यशाली रहा कि महाप्रज्ञ साहित्य ने मेरे साहित्य लेखन यात्रा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

मुख्य अतिथि राजसमंद विधायक श्रीमती दीप्ति माहेश्वरी ने कहा आज जब आदमी डिप्रेशन के चंगुल में उलझता जा रहा है ऐसे में आचार्य महाप्रज्ञ के विचार एक बड़ा बदलाव ला सकते हैं। विधायक ने अभिभावकों से आव्हान किया कि बच्चों में संस्कार निर्माण के लिए उन्हें अपने धर्मगुरुओं के पास ले जाना चाहिए। विशिष्ट अतिथि अणुविभा राष्ट्रीय अध्यक्ष संचय जैन ने कहा कि महाप्रज्ञ का जन्म दिवस उनकी महानताओं की स्मृति कर जीवन को प्रगति के पायदानों पर ले जाने का महान अवसर है। चेतना को जिसने गहनता से जी लिया वही महाप्रज्ञ हो सकता है।

इस अवसर पर तेरापंथ महासभा के आंचलिक प्रभारी धीरेंद्र मेहता, तेयुप अध्यक्ष अक्षय बडाला, टीपीएफ अध्यक्ष मुकेश बोहरा, महिला मंडल मंत्री श्रीमती दीपिका मारू, अणुव्रत समिति अध्यक्ष आलोक पगारिया, राकेश चपलोत, सभा उपाध्यक्ष कमल नहाटा, श्रीमती पुष्पा कर्णावत ने आचार्यश्री के प्रति अभ्यर्थना प्रस्तुत की। स्वागत तेरापंथ अध्यक्ष अर्जुन खोखावत ने किया। आभार सहमंत्री महेश पोरवाल ने जबकि संचालन मंत्री विनोद कच्छारा ने किया गया।

कार्यक्रम के दौरान आगामी 17 दिसंबर को आयोजित होने जा रहे मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव बैनर का राजसमंद विधायक श्रीमती दीप्ति माहेश्वरी ने लोकार्पित किया।

प्रेम गमेती को आचार्य महाप्रज्ञ अणुव्रत सेवा सम्मान :

कार्यक्रम में अणुव्रत समिति द्वारा विज्ञान समिति कर्मचारी प्रेमकुमार गमेती को सुंदरदेवी चेरिटेबल ट्रस्ट की ओर से उल्लेखनीय सेवाओं के लिए 21000 रुपए की राशि, उपरना, पाग, प्रशस्तिपत्र भेंट कर आचार्य महाप्रज्ञ अणुव्रत सेवा सम्मान से सम्मानित किया गया। अणुव्रत समिति अध्यक्ष आलोक पगारिया, संरक्षक गणेश डागलिया ने प्रतिवर्ष दिए जाने वाले पुरुस्कार के संदर्भ में जानकारी देते हुए अणुव्रत अनुशास्ता को विनयांजलि समर्पित की।

जेके ऑर्गेनाइज़ेशन द्वारा रक्तदान शिविर आयोजित

उदयपुर (ह. सं.)। जेके ऑर्गेनाइज़ेशन के पूर्व अध्यक्ष हरिशंकर सिंघानिया की 89वीं जयंती के उपलक्ष्य में ऑर्गेनाइज़ेशन के विभिन्न प्लांट्स एवं कार्यालयों में 'रक्तदान शिविरों' का आयोजन किया। जेके ऑर्गेनाइज़ेशन के 5500 से अधिक कर्मचारियों ने रक्तदान अभियान में हिस्सा लिया जिन्हें प्रमाण पत्र दिया गया।

जेके ऑर्गेनाइज़ेशन के चेयरमैन भरतहरि सिंघानिया ने कहा कि हमारे संस्थापकों के दृष्टिकोण के अनुसार समाज को कुछ देने के प्रयास में जेके ऑर्गेनाइज़ेशन पिछले 100 सालों से सभी को गुणवत्तापूर्ण जीवन उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है। हरिशंकर सिंघानिया की जयंती पर जेकेओ ग्रुप कंपनीज़ में आयोजित यह रक्तदान अभियान बड़ी संख्या में लोगों के कल्याण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है, जो ज़रूरतमंद मरीज़ों को रक्त देकर उन्हें नया जीवन दे सकता है। जेके ऑर्गेनाइज़ेशन की सभी ग्रुप कंपनियों- जेके टायर, जेके पेपर, जेके लक्ष्मी सीमेंट, जेके एग्री जेनेटिक्स, जेके फेन्नर, उमंग डेयरीज लि., ग्लोबल स्ट्रैटेजिक टेक्नोलॉजीज लि., क्लिनीआरएक्स टेंजेंट रीसर्च लि., इंडिका ट्रेवल्स, पीएसआरआई हॉस्पिटल एवं जेके लक्ष्मीपत युनिवर्सिटी ने इस अभियान में हिस्सा लिया।

ई-गवर्नेंस परियोजना ने 15 लाख से ज्यादा लेनदेन का माइलस्टोन पार किया

उदयपुर (ह. सं.)। भारत के एकीकृत ओमनी चैनल वित्तीय सेवा प्लेटफॉर्म- एयरपे पेमेंट सर्विसेस ने राजस्थान सरकार की महत्वाकांक्षी ई-गवर्नेंस और सशक्तिकरण पहल ई-मित्र को ताकतवर बनाते हुए 15 लाख से ज्यादा लेनदेन करने की बड़ी उपलब्धि हासिल की है।

एयरपे के संस्थापक एवं एमडी कुणाल झुनझुनवाला ने कहा कि एयरपे महामारी फैलने के दौरान अप्रैल 2020 में ही ई-मित्र प्लेटफॉर्म के साथ जुड़ गई थी, जिससे राजस्थान के नागरिकों का जीवन बेहतर बनाने में यह पहल सामयिक और प्रभावी सिद्ध हुई। ई-मित्र प्लेटफॉर्म पर एयरपे द्वारा संचालित आरंभिक परियोजनाओं में शामिल यह पहल मुख्यमंत्री कोविड राहत कोष में निर्बाध रूप से सुविधा-शुल्क रहित योगदान करने का सुभीता प्रदान कर रही थी। अपनी भुगतान संग्रह प्रौद्योगिकी की बदौलत एयरपे ने राजस्थान सरकार के 100 से ज्यादा विभागों को ई-मित्र प्लेटफॉर्म से जोड़ने में सक्षम बनाया। इसके बाद कंपनी ने इस प्लेटफॉर्म पर अपनी सेवाओं के गुलदस्ते का विस्तार किया, जिसमें विभागों को पेमेंट गेटवे सेवाओं की पेशकश तथा ई-मित्र कियोस्क नेटवर्क के माध्यम से एईपीएस-आधारित नकद निकासी के लिए घरेलू धन हस्तांतरण जैसी कई सेवाएं शामिल हैं।

मारवाड़ी यूनिवर्सिटी में प्रवेश प्रक्रिया शुरू

उदयपुर (ह. सं.)। गुजरात की मारवाड़ी यूनिवर्सिटी ने शैक्षणिक सत्र 2022-23 के लिए अपनी प्रवेश प्रक्रिया शुरू कर दी है। मारवाड़ी यूनिवर्सिटी के डॉ. संदीप संचेती ने बताया कि इच्छुक विद्यार्थी साइंस, इंजीनियरिंग, कॉमर्स, कंप्यूटर एप्लीकेशन, लॉ, आर्ट, फार्मेसी, फिजियोथेरेपी, बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन,मैनेजमेंट, एग्रीकल्चर और रिसर्च पाठ्यक्रमों में प्रवेश प्राप्त कर सकते हैं। स्नातक स्तर पर इलेक्ट्रिकल, मैकेनिकल, सिविल, आईटी, आईसीटी, कंप्यूटर, केमिकल और ऑटोमोबाइल में बी.टेक, बी.एससी, बीबीए, बी.कॉम, बी.कॉम एलएलबी (ऑनर्स), बीए एलएलबी (ऑनर्स), एलएलएम, बीसीए, बी.एससी, आईटी, बी.फार्म, बी. फिजियोथेरेपी, और बी.एससी. (ऑनर्स) एग्रीकल्चर के लिए प्रवेश जारी है।

उन्होंने बताया कि स्नातकोत्तर स्तर पर, विद्यार्थी मैकेनिकल, सिविल, एनवायरमेंट इंजीनियरिंग, केमिकल इंजीनियरिंग, साइबर सिक्योरिटी, सीएडी/सीएएम, थर्मल, आईसीटी, कंप्यूटर, जियो टेक, स्ट्रक्चर, ट्रांसपोर्ट इंजीनियरिंग और इलेक्ट्रिकल - इलेक्ट्रिक और हाइब्रिड व्हीकल पावर इलेक्ट्रॉनिक्स और इलेक्ट्रिकल ड्राइव जैसे विषयों में एम.टेक, माइक्रोबायोलॉजी, बायोटेक्नोलॉजी, केमिस्ट्री, फिजिक्स, मैथ्स और एनवायरमेंट साइंस में एमएससी; साइबर सिक्योरिटी और साइबर लॉ में एमएससी; एमबीए और एमबीए (बिजनेस एनालिटिक्स) की डिग्री के लिए आवेदन कर सकते हैं। इंफॉर्मेशन एंड कम्युनिकेशन टेक्नोलॉजी(आईसीटी) इंजीनियरिंग जैसे नए प्रोग्राम के लिए भी प्रवेश प्रक्रिया जारी है, यह एक तेजी से बढ़ता हुआ क्षेत्र है जिसमें 2019 में 53.2 मिलियन रोजगार मिलने के बाद अब 2023 में 62 मिलियन के रोजगार के अवसर मिलने अनुमान हैं।

प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

उदयपुर (ह. सं.)। रोटरी क्लब उदयपुर ने रोटरी लीडरशिप इंस्टीट्यूट (आरएलआई) के दो दिवसीय आवासीय कार्यक्रम की मेजबानी की जिसमें रोटरी ज्ञान और नेतृत्व कौशल प्रदान करने के रूप में अतीत, वर्तमान और भविष्य के रोटरी इंटरनेशनल नेताओं द्वारा इसकी अत्यधिक अनुशंसा की गई।

रोटरी क्लब मीरा की अध्यक्ष सुषमा कुमावत ने बताया कि रोटरी नेतृत्व संस्थान क्लब के प्रमुख लोगों के रोटरी ज्ञान में सुधार करने का एक उत्कृष्ट अवसर है। अन्य अनुभवी रोटेरियन के साथ 18 विषय/विषय विचारों का आदान-प्रदान ही पाठ्यक्रमों को सार्थक बनाता है। स्नातक पाठ्यक्रम के चार भाग शामिल हैं। प्रशिक्षण दो भागों में आयोजित किया गया था। भाग 1-2 की मेजबानी 10-12 मार्च को तथा भाग 3 संकाय अभिविन्यास और पाठ्यक्रम का प्रशिक्षण 25-26 जून को आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पीडीजी के पूर्व डिस्ट्रिक्ट गवर्नर निर्मल सिंघवी थे। सुषमा कुमावत ने रोटरी क्लब मीरा की गतिविधियां और उद्देश्य की जानकारी दी। आरएलआई रोटरी डिस्ट्रिक्ट (3054) की कॉर्डिनेटर सीमासिंह ने बताया आरएलआई पाठ्यक्रम यथासंभव अधिक से अधिक चर्चा और सक्रिय भागीदारी प्रदान करते हैं। पाठ्यक्रम विधियों में चर्चा समूह, भूमिका निभाना, समस्या समाधान गतिविधियाँ, परियोजना डिजाइन और मीडिया प्रस्तुतियाँ शामिल हैं। प्रशिक्षकों में रोटरी डिस्ट्रिक्ट 3053 से बीकानेर के पीडीजी अरुणप्रकाश गुप्ता, मुंबई के सीएम बेंद्रे, आरआईडी 3142, बीकानेर आरआईडी 3053 के प्रदीप लठ, इंदौर आरआईडी 3060 के एसएम शर्मा और उदयपुर की सीमासिंह शामिल थे। प्रशिक्षण कार्यक्रम 9 क्लबों के 24 प्रतिभागियों के साथ आयोजित किया गया।

कठपुतलियों द्वारा अणुव्रती .....

(पृष्ठ तीन का शेष)

सामरजी ने किं कर्तव्य विमूढ़ से स्वप्नदर्शी यथार्थ में डोलते इतराते पिछड़े 'भारत राष्ट्र महान' के लिए इस पुरस्कार को प्राप्त कर पूरे विश्व का ध्यान आकृष्ट कर लिया।

अपनी अनुभवजन्य खोजों के आधार पर सामरजी ने यह सिद्ध कर दिया कि भारत (राजस्थान) ही पुतलियों की जन्मस्थली है। इसकी खबर सुन भारत सरकार ही नहीं, पूरा देश ही गर्व से अपना सीना दहाड़ता देखा गया। इस खुशी में सांस्कृतिक मंत्रालय ने वैश्विक परिदृश्य में कठपुतली प्रयोगों पर सामरजी से एक पुस्तिका तैयार कर प्रकाशित भी की।

सन् 1971 में सामरजी की षष्ठिपूर्ति पर मैंने जब 'गेहरो फूल गुलाब रो' नाम से उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्वपरक अभिनंदन ग्रंथ प्रकाशित किया तब आचार्यश्री तुलसी ने बतौर आशीर्वाद यह संदेश लिख भिजवाया-

''जो शाश्वत को अभिव्यक्ति देता है, सही अर्थ में कलाकार है। श्री देवीलाल सामर को मैंने एक कलाकार के रूप में पाया है। वे ज्ञान की कुल्हाड़ी से श्रद्धा के कल्पतरु को काटने में विश्वास नहीं करते हैं। इसीलिए वे ग्रामीण व अनपढ़ लोगों की भावना को जगाने में बहुत सफल सिद्ध हुए हैं। कठपुतलियों में प्राण भरने की क्षमता जिसे प्राप्त है वह व्यक्ति निष्प्राण नहीं हो सकता।''

सामरजी के निधन के पश्चात जब मैं कलामंडल का निदेशक था तब एक रात्रि को आचार्यश्री तुलसी सहित अन्य सहवर्ती साधु-साध्वियों ने कलामंडल का भवाई, तेराताली नृत्य तथा कठपुतली प्रदर्शन का कार्यक्रम देखा था तब महाप्रज्ञजी ने मुझे कहा था, 'अपने लेखन में लोककला-संस्कृति के साथ धर्म का समन्वय अवश्य रखना। धर्ममय कला-संस्कृति और कला-संस्कृतिमय धर्म ही जीवन को परिपूर्ण बनाता है। आदिम जीवन से लेकर आज के अधुनातन जीवन जीने वालों में भी यदि धर्म और कला का उत्तम समन्वय है तो वे सुखी जीवन का निर्वाह कर रहे हैं। विसंगतियां तभी आती हैं जब इनका संतुलन बेमेल हो जाता है।' मेरे लिए उनकी यह सीख आज भी प्राणवंत बनी हुई है।

तुलसी-महाप्रज्ञ मसीहा-मनीषी :

आचार्य तुलसी ने जहां-जहां भी विचरण किया, महाप्रज्ञ सदैव उनके साथ रहे। दोनों का संबंध मसीहा-महर्षि का था। अपनी शोधयात्राओं के दौरान जहां-जहां, जब-जब भी अवसर मिला, मैंने आचार्यश्री एवं महाप्रज्ञजी के दर्शन किए। वे सदैव मुझे लेखन की ओर प्रवृत्त करते रहे और लेखन संबंधी जानकारी लेते रहे। मेरे अग्रज डॉ. नरेन्द्र भानावत और माता डेलूबाई को उन्होंने हर समय याद किया। वे अक्सर कहा करते थे, 'तुम्हारी माताजी बड़ी सुधारवादी थीं। कानोड़ में सबसे पहले उन्होंने ही हमारे कहने से विधवा वस्त्र (काले-वस्त्र) त्याग कर श्वेत-वस्त्र धारण किये। नरेन्द्र ने भी जैनदर्शन की अच्छी पकड़ रखी। जयपुर में आचार्यश्री और महाप्रज्ञजी ने भाई साहब के आवास पर पधार कर माताजी को दर्शन दिये जब वे बीमार चल रही थीं।

उदयपुर के 2007 के चातुर्मास में मैंने महाप्रज्ञजी के सपरिवार दर्शन किये। एक दिन तनिक मुस्कराते हुए उन्होंने कह दिया- 'पहले इतने अधिक आते थे कि अब उसका बैलेंस पूरा कर रहे हो।' मुझे समझते देर नहीं लगी कि अब मैं अधिक नहीं जुड़ पा रहा हूं। एक समय था जब मैं प्रतिदिन सामायिक करता था और उसमें नवकार मंत्र की माला फेरता था।

मुझे अच्छी तरह याद है, एक दिन सामायिक में मैंने ध्यानस्थ हो पांच नवकार मंत्र की मालाएं फेरीं और जब घड़ी देखी तो पूरे 48 मिनिट हो गए थे। उसके बाद न सामायिक का वह क्रम रहा और न माला फेरने का ही किन्तु मैं ऐसा मानता हूं कि मेरे लेखन में उसका ही एक भिन्न रूप आ समाया है। जीवन में कई बार ऐसे प्रसंग आये जब जैनत्व के संस्कारों ने मेरी नाव चलैया की।

उदयपुर में जब-जब भी आचार्य महाप्रज्ञजी का व्याख्यान सुना तो मुझे लगा कि वे जैनशास्त्रों की बंधीबंधाई लीक से परे आमजन के साथ जो व्यावहारिक घटनाएं घटती हैं उन्हीं को अपना विषय बनाकर समस्या का निदान देते हैं और खुशहाल जीवन जीने की नींव बांधते हैं। कोई घटना, कोई संस्मरण, कोई आख्यान, कोई समाचार, कोई समस्या, कोई आदर्शपरक दृष्टांत सुनाकर वे अपना वक्तव्य प्रारंभ करते हैं और कई उदाहरणों, उद्धरणों, महापुरूषों के जीवनानुभवों तथा अपने निजी चिंतन से जो निष्कर्ष प्रस्तुत करते हैं वे सभी के लिए अमृत तुल्य होते हैं।

यही कारण है कि उनकी धर्मसभा में हर जगह, हर समय मैंने सभी जाति के बड़े से बड़े तपके से लेकर निम्न कहे जाने वाले तपके के लोगों को देखा है। निश्चय ही उनके सान्निध्य एवं सम्पर्क से कइयों का जीवन बदला है। सोच और समझ बदली है। मन बदला है। कइयों ने सात्विक जीवन जीने की राह पकड़ी है और उन सारे मार्गों को छोड़ा है जो कड़वाहट भरे, अठीक कहे जाने वाले तथा बड़ी कमाई के जरिया थे किन्तु वे दुखद परिणति के ही सबब थे।

कहना नहीं होगा कि गणाधिपति तुलसी के बाद आचार्य महाप्रज्ञ ने तेरापंथ धर्म संघ की परम्परा को पूरे विश्व में प्रतिष्ठित किया और संघ को मर्यादित, संगठित, अनुशासित एवं संयमित बनाए रखा। वे आचार्य तुलसी के सबसे नजदीक वैचारिक मनोरथ के सम्पोषक थे। उनके सान्निध्य, मार्गदर्शन और प्रेरक संबल से महाप्रज्ञजी ने प्रेक्षाध्यान तथा अणुव्रत आन्दोलन के माध्यम से भारतीय धर्म, अध्यात्म एवं दर्शन की मनोभूमि को संरक्षित करते हुए भगवान महावीर के संदेश को वैज्ञानिक मंथन दिया। उनकी संयत वाणी, संयमी जीवन तथा सदाचारी परिवेश ने पूरे विश्व को शांति एवं भाईचारे का संदेश दिया। महावीर ने अपने युग में जिन मानवमूल्यों को लेकर जन-जन को जो संदेश दिया था, वही संदेश और वही वाणी मैंने आचार्य महाप्रज्ञ में मूर्तिवंत होते पाई।

सच तो यह है कि तुलसी तेरापंथ धर्मसंघ के मसीहा थे तो महाप्रज्ञ महर्षि। उनके पश्चात इस धर्मसंघ के ग्यारहवें आचार्य महाश्रमण में तुलसी और महाप्रज्ञ की मिलीजुली दर्शना द्वारा शुद्ध एवं सात्विक जीवनशैली के जो वैश्विक परचम दिये जा रहे हैं वे अद्‌भुत एवं बेजोड़ ही हैं।

भेड़िये बहुत भूखे हैं

- डॉ. पूरन सहगल -

जल रहा है सूरज आग के गोले की तरह।
गल रही है देह, बह रहा है पसीना,
भट्‌टी पर बैठे सेव बनाते हलवाई की तरह।
बार-बार जा रही बिजली, लगता है,
दिग्विवजय सिंह की सत्ता लौट आई है।
रो रहे हैं भयभीत गली के कुत्ते
सिर उठाकर आकाश की ओर,
चूहे दौड़ने लगे हैं बेतहाशा जंगलों की तरफ़
लगता है फिर कोई सुनामी आने वाली है।
मेरे घर के सामने वाले पेड़ पर,
चिंचिया रही है चिड़िया,
एक-एक कर टूट रहे हैं उनके घौंसले,
लगता है बदल गई है सत्ता पेड़ की,
कोई बाज आ गया है।
आग उगल रहे हैं टी. वी. के नेता,
गर्म हो उठी है स्क्रीन,
डर लगता है कहीं, किरच-किरच,
बिखर न जाय स्क्रीन,
टी. वी. बंद कर दो,
लगता है बहुत बढ़ गई है भूख,
भेड़िये बहुत भूखे हैं, राम भला करे।

अकादेमी : साहित्य की संसद

-बी.एल.माली 'अशांत'-

अकादेमी हरीभरी रहनी चाहिए
उदास नहीं
रवीन्द्र भवन गूंजता रहना चाहिए
लेकिन
कौवों की आवाज से नहीं।
साहित्य अकादेमी
देश की साहित्य संसद है
कौवा घर नहीं
सरपंच पत्नियों का आवास नहीं
सरपंच-पतियों का घर नहीं
तेरा बैंगण मेरी छाछ नहीं
श्राद्ध की हांते नहीं
कुचमाद नहीं
घात का घर नहीं
साहित्य अकादेमी देश की साहित्य संसद है।

ट्रेंड्स शॉपिंग फेस्टिवल की घोषणा

उदयपुर/ चित्तौड़गढ़। देश के सबसे बड़े फैशन रिटेलर ट्रेंड्स ने भारत की सबसे बड़ी फैशन सेल -'ट्रेंड्स शॉपिंग फेस्टिवल' की घोषणा की है। ट्रेंड्स भारत का सबसे बड़ा फैशन रिटेलर है, जो कि अपने ऑन ट्रेंड, बिलकुल नये स्टाइल एवं हाई ऑन फैशन के लिये विख्यात है। अपने नाम के अनुरूप ट्रेंड्स फैशन की अब तक की सबसे बड़ी सेल के माध्यम से ग्राहकों को सर्वश्रेष्ठ

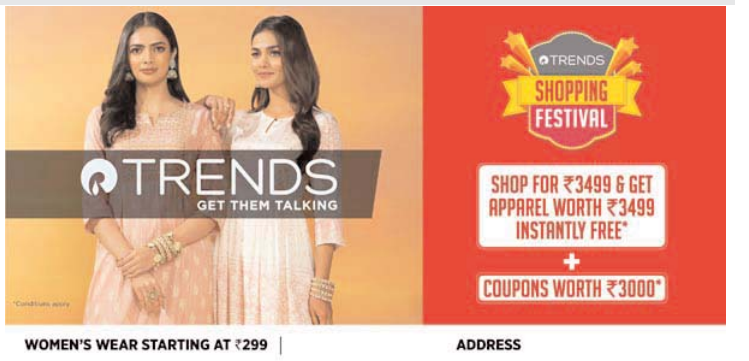

फैशन एवं ब्रांड्स की पेशकश के लिये तैयार है। ट्रेंड्स ने इस शॉपिंग फेस्टिवल में 3499 रूपये की खरीद पर एक्सक्लुसिव ऑफर के तहत 3499 रूपये मूल्य के मुफ्त मर्चेंडाइज देने की पेशकश की है, जिसमें पुरूष परिधान, बच्चों के परिधान एवं महिलाओं के परिधानों की वृहद श्रृंखला शामिल है।

इस सेल के माध्यम से ट्रेंड्स कोई भी कसर नहीं छोड़ना चाहता है एवं ग्राहको को आकर्षक/अनूठे आफर्स, कीमतों के जरिये अपनी ओर आकर्षित करने के लिए प्रतिबद्ध है। सुनिश्चित उपहार, पुरस्कार इत्यादी भी यह सेल ग्राहकों को अपनी ओर आकर्षित करेगी। ग्राहकों को उनकी सभी फैशन जरूरतों के लिए खरीदारी करने में सक्षम बनाने के लिए ट्रेंड्स की ओर से बेजोड़ उत्पादों एवं घटी हुई कीमतों की पेशकश की गई है। देश में फैशन के प्रति उत्साही लोगों के लिए ट्रेंड्स खुदरा विक्रेता का एक पर्याय बन गया है एवं विशेष रूप से क्यूरेटेड पुरुषों और महिलाओं के परिधान और सहायक एसेसरीज कलेक्शन की पेशकश करता है ।

राजस्थानी लोककलाओं का सर्वेक्षण (14)

- डॉ. महेन्द्र भानावत -

नगरश्री चुरू :

रात की 12 बजे हमने मास्टरजी से विदा ली और अपना गंतव्य पकड़ा। प्रात: 8 बजे हम लोग रही सही जानकारी तथा कुछ रेकार्डिंग करने के लिए सीधे 'नगरश्री' पहुँचे। यहां गोविन्दजी से धोंकलराम तथा तेजपाल लोहिया नामक ख्याल लेखकों सम्बन्धी नवीन जानकारी प्राप्त हुई। इस समय नजदीक से हमने 'नगरश्री' का भी अवलोकन किया। अग्रवाल बंधुओं की साधना, निष्ठा और तपस्या का यह सुफल चुरू की साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक समृद्धि की अलभ्य धरोहर बनती जा रही है।

'नगरश्री' में हमने मामराज स्वामी, तिलोक नाई तथा उनकी लड़की से धमाल, लूर, ओलू, चनणा, सुपना, मूमल आदि गीत रेकार्डिंग किये। यहां से हम लोग शनि महाराज से कुछ रेकार्डिंग करने के लिए उनके शिवजी के मन्दिर में गये जहाँ कुछ लोकगीत तथा भजन रेकार्ड किये।

कठपुतली तथा कच्छीघोड़ी नचाने वाले भी इस क्षेत्र में घूमते रहते हैं। कुछेक अग्निनर्तक भी हैं। रेवड़ चराते समय पाबूजी के माठ बजाने वाले भी इधर देखने को मिलते हैं। कालबेलियों, सांसियों तथा खोजों के नृत्य भी उल्लेखनीय रहे हैं। चंडा चमार, चौथू भांभी तथा लक्खू धमाल गाने के नामी कलाकार थे। पड़िहारा गांव में धमाल गाने वालों की, पिता तथा उसके सात पुत्रों की, पूरी एक सधी हुई मण्डली थी। राजगढ़ की गींदड़ बड़ी कलात्मक कही जाती है।

डॉ. मनोहर शर्मा जब रामगढ़ थे तब एकबार उन्होंने बिसाऊ की रामलीला के सम्बन्ध में कुछ सूचनाएँ दी थीं तब से वहाँ की रामलीला विषयक जानकारी प्राप्त करने की जिज्ञासा बराबर हमारे मन में पैठी रही । यह अच्छा अवसर था। चुरू से बिसाऊ अधिक दूर भी नहीं था। अत: हम यहां से 14 अक्टूबर 1968 को प्रात: बिसाऊ चले गये। इसमें कोई संदेह नहीं कि मनोहरजी की अप्रतिम साहित्य-साधना तथा 'वरदा' पत्रिका के फलस्वरूप बिसाऊ भी राजस्थान के प्रसिद्ध साहित्यिक तीर्थों में से एक विशिष्ट तीर्थ बन गया।

बिसाऊ की रामलीला :

शर्माजी के सन्दर्भ से हमलोग सीधे रामलीला कमेटी के सचिव श्री गोविंदजी के पास अपना मंतव्य लेकर पहुंचे। गोविंदजी तत्काल ही हमारे साथ हो लिये और उन्होंने अपनी ही दुकान पर 75 वर्षीय सदूरामजी गुरू से हमारा परिचय कराया। उनके कथनानुसार लगभग सौ वर्ष पूर्व सर्वप्रथम गूगामेड़ी पर जमना श्यामण ने यहाँ की रामलीला का सूत्रपात किया। प्रारंभ में यह बुढ़िया छोटे-छोटे बच्चों के साथ खेल तमाशे किया करती थी। इन्हीं खेल तमाशों से धीरे-धीरे उसने बच्चों के माध्यम से रामजीवन की लघुलीलाएँ प्रारम्भ करदीं। तत्कालीन बिसाऊ ठाकुर बिसनसिंहजी बुढ़िया की इन लीलाओं से बड़े प्रभावित हुए फलत: उन्होंने अपने यहाँ गाँव में गढ़ के पास इसका विधिवत आयोजन प्रारम्भ कर दिया। राजस्थान में अपने प्रकार की यह एक ही रामलीला है जो प्रारम्भ से अन्त तक मूकाभिनय में चलती है।

राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न तथा सीता को छोड़ शेष सभी पात्र अपने मुंह पर चेहरे धारण करते हैं। चेहरे बनाने का काम यहीं के चेजारे करते हैं। रामदेव चेहरे बनाने के नामी कलाकार थे। पोशाकों में राम लक्ष्मण तथा भरत शत्रुघ्न के लिए प्रतिवर्ष नई पोशाकें बनाई जाती हैं। इनके अतिरिक्त हनुमानजी की लाल, सुग्रीव की हरी, अंगद की पीली, दधिमुख की सफेद, जामवंत की कत्थई रंग की पोशाकें होती हैं। पोशाकों के अनुकूल चेहरे भी उसी रंक के होते हैं।

राम लक्ष्मणादि के मुकुट एवं कुण्डलादि चांदी के बने हुए सेठों द्वारा भेंट स्वरूप दिये गये हैं। राक्षसों के हाथ में तलवार भाला, बरछी, कटार, बाण, ढाल आदि रहती है। नल नीलादि वानरों के पास गदा तथा रामादि भाइयों के पास धनुष बाण रहता है। कुम्भकरण, मेघनाद, रावण तथा उसका लड़का नारायण, इन चारों के पुतले जलाये जाते हैं। इन पुतलों में विभीषण आग लगाता है। ये पुतले कागज व बांस की सहायता से बीस-बीस फुट ऊंचाई लिए होते हैं जो फतहपुर के दारूगर बारूद वाल अहमद द्वारा बनाये जाकर बारूद, पटाखों तथा घासफूस से भरकर रस्सियों से बांध कर जलाये जाते हैं। पुतलों की आग का दृश्य बड़ा ही दर्शनीय होता है।

बिसाऊ की रामलीला में प्रयुक्त मुखौटे

स्वरूप केवल ब्राह्मण ही बनते हैं अन्य नहीं। बाकी पात्रों में किसी भी जाति का कोई भी व्यक्ति हो सकता है। वाद्यों में ढोल, झांझ, भेर तथा उरदी बजाई जाती है। ये वाद्य हरिजनों द्वारा बजाये जाते हैं । तुलसी कृत रामायण के आधार पर प्रतिदिन सायं 5 से 7 बजे तक पुजारी चौपाइयां बोलता है। वही उन्हें अरथाता है और उसी के संकेत-निर्देश के अनुसार मंच पर पात्र मुखातिब होते हुए दिखाई देते हैं। वर्तमान पुजारी कन्हैयालाल शर्मा पिछले 50 वर्षों से इस रामायण का संचालन एवं निर्देशन करते आ रहे हैं। इनके पहले लक्ष्मीनारायणजी पुजारी थे। रामादि चारों भाई, सीता, हनुमान तथा पुजारीजी को प्रतिदिन दूध कलेवा कराया जाता है। अयोध्या, पंचवटी, लंका आदि अलग-अलग लकड़ी के बने हुए होते हैं। जलाने की लंका दूसरी बनाई जाती है।

गोविंदजी ने हमारे काम में दिल खोलकर आत्मीयतापूर्वक

कच्छीघोड़ी नृत्य

रुचि ली और हमें रामलीला विषयक सारी सामग्री भी दिखाई। हमने कई चेहरों के चित्र भी खींचे। इसी बीच हमारा परिचय राधेश्यामजी सिंगतिया से कराया गया। सिंगतियाजी यहाँ के सांस्कृतिक एवं साहित्यिक कार्यों के सक्रिय प्रेमी हैं। ये पत्रकार भी रह चुके हैं। श्री सनातन धर्म महावीर दल के संस्थापक संचालक के रूप में पिछले 20 वर्षों से साहित्यिक उन्नयन में लगे हुए हैं। इनके यहां ख्यालों का अच्छा संग्रह है। इसमें से कुछ ख्याल मैंने अपने लिए तथा कुछ भारतीय लोककला मण्डल के लिए भी खरीदे।

यहीं हमने पं. सूरजमल गुरु लिखित चौक च्यानणी विषयक गजलें भी देखीं। इनमें गजल बिसाऊ और उसके मदरसे की, गजल प्रहलाद चरित्र और उसके मदरसे की, चुरू में भगवानदास के झगड़े की गजल, गजल कृष्णलीला तथा गजल सौदे की भी इनसे अपने संग्रह के लिए प्राप्त की। सभी गजलें द्वितीय बार संवत् 2005 की जयहिंद प्रिंटिंग प्रेस, सीकर में प्रकाशित हुई हैं। गजल बिसाऊ और उसके मदरसे की के अंत में रचनाकार ने गजल रचना के सम्बन्ध में 'सावण सुदी 8 सुभवार 1954 में करी तयार' लिखा है। इससे इन गजलों के रचनाकाल पर प्रकाश पड़ता है।

पिलानी पड़ाव :

यहाँ से 15 अक्टूबर 1968 को हम पिलानी पहुँचे। गेस्ट हाउस में अपना सामान रख हम सीधे मरुभारती के सम्पादक डॉ. कन्हैयालाल सहल से भेंट करने उनके निवास 'सहल सदन' पहुँचे परन्तु उनके प्रवास में होने की वजह से हमारी उनसे भेंट नहीं हो पाई। यहां से हम प्रो. पतरामजी गौड़ से मिलने गये। आध-पौन घंटे के दौरान में लोकधर्म के कई पहलुओं पर उनसे विस्तारपूर्वक वार्ता-विमर्श हुआ। उनसे ज्ञात हुआ कि यह क्षेत्र धाड़ेती विषयक गीतों का भरापूरा भंडार है। कथक्कड़ भी इधर कई हुए हैं। ये जोगी होते हैं जिनका अखूट कथा सागर श्रोताओं को मनोरंजित कर लोटपोट करता रहता है।

सीकर के पास रेवासा गांव मणिधर सर्प का मुख्य स्थल रहा है। इस सर्प के पूजक विशिष्ट जोगी होते हैं जो पहनने तथा ओढ़ने के लिए काली कंबली काम में लाते हैं। ये लोग अपनी आजीविका उपार्जन के लिए न तो भीख आदि मांगते हैं न कुछ काम कमाई ही करते हैं। कहते हैं कि ये नागों की नौ कुली के ज्ञाता होते हैं। इसके सहारे ये मणिधर सर्प को बुलाते हैं। सर्प आकर इन्हें सोने की मुहर दे जाता है जिससे ये लोग बैठे-बैठे मस्ती से अपना गुजारा चलाते हैं। गींदड़, चौक चांदणी, लूर, धमाल आदि लोकानुरंजनों की भी इस क्षेत्र में बड़ी स्वस्थ परम्परा रही है।

यहाँ से चलकर हम सीधे विद्याविहार डॉ. प्रो. पी. भाटी के वहाँ पहुँचे। इनकी धर्मपत्नी श्रीमती पुष्पा भाटी प्रो. गौड़ के निर्देशन में राजस्थान के लोक-देवताओं पर रिसर्च कर रही हैं। शोध के सिलसिले में भाटी दंपति पहले कला मण्डल आ चुके थे। अत: इनसे हमारा पूर्व परिचय था। यहां रात्रि को बारह बजे तक हमारी सर्वे संगोष्ठी चलती रही। यहीं के दो शोधकर्मी ब्रजलालसिंह तथा प्रतापसिंह जो क्रमश: पाबूजी राठौड़ के पवाड़े तथा राजस्थानी वीराख्यान विषय पर शोध कर रहे हैं, अपनी पिछली शोधयात्रा में कला मण्डल आ चुके थे अत: उनसे मिलना भी हमने आवश्यक समझा।

डॉ. भाटी के विशेष प्रयत्न से प्रात: होते ही ब्रजलालजी से हमारा सहज मिलन हो गया। उन्होंने हमें वहां के दर्शनीय स्थान दिखाये और प्रतापसिंह तथा प्रो. महावीरप्रसाद मिश्र से भेंट कराई। मिश्रजी शेखावाटी के लोकसाहित्य पर शोधकार्य कर रहे हैं। पिलानी में अधिक नहीं ठहरकर हमने यहां से चिड़ावे की बस पकड़ी।

चिड़ावा खिलाड़ी :

चिड़ावा के स्वर्गीय नानूराणा ने आज से लगभग सौ वर्ष पूर्व ख्यालों की एक नई शैली को जन्म दिया जो चिड़ावी ख्यालों के नाम से प्रचारित हुई। नानू हिन्दी, संस्कृत, डिंगल तथा पिंगल के कोविद थे। इन्होंने लगभग 36 ख्याल लिखे। हरपतराम, शिवबक्षराम, घनश्यामदास तथा गोविन्दराम इनके गुरु थे जिनको इन्होंने अपने ख्यालों में स्मरण किया है। अंतिम अवस्था में इन्होंने पांडवों का चौथा भाग लिखा। नानू स्वभाव से बड़े मौजी, दिलेर तथा फक्कड़ थे। पैसे को ये हाथ का मैल समझते थे इसीलिए जितना कमाते थे उतना ही यार दोस्तों को खिलाने-पिलाने में पूरा कर देते थे।

तत्कालीन धनी मानी सेठ साहूकारों पर इनका अच्छा वर्चस्व था। इनके भतीजे दूला राणा अभी 70 वर्ष के हैं। इनका पूरा परिवार नानू के ख्यालों पर ही टिका हुआ है। वर्ष में दो तीन महीनों के लिए यह परिवार प्रदर्शनों के लिए चल पड़ता है और उस आय से पूरे वर्ष भर अपना भरण पोषण करता है। गत वर्ष संगीत नाटक अकादमी की ओर से आयोजित लोकनाट्य समारोह में इस दल को कला मण्डल में आमंत्रित किया गया था। नानू की विशुद्ध ख्याल परम्परा पर आधारित प्रदर्शनों द्वारा इस दल ने यहाँ बड़ा नाम कमाया फलत: केन्द्रीय संगीत नाटक अकादमी के सचिव डॉ. सुरेश अवस्थी ने इस दल को दिल्ली बुलवाकर उसके विशिष्ट प्रदर्शन आयोजित किये। जनवरी 1968 में राजस्थान संगीत नाटक अकादमी ने जोधपुर में दूलियाजी को उनकी ख्याल सेवाओं पर लोकनृत्य गीतों के विशेष समारोह में सम्मानित भी किया।

- क्रमश:

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।